वार्षिक 100/— रुपये सितम्बर 2011 वर्ष 12, अंक 11 एक प्रति 10/—रुपये

गोसम्पदा

सम्पादकीय

भ्रष्टाचार उन्मूलन गोवंश रक्षण में भी सहायक

16 अगस्त 2011 का दिन महत्वपूर्ण एवं संस्मरणीय दिवस बन गया है। जैसे स्वतंत्रता के लिए 23 मई अर्द्धरात्रि 1857 का दिन था, क्योंकि उस दिन सम्पूर्ण देश में एक साथ क्रान्ति होनी थी। दुर्योग से उस पूरी क्रान्ति की सूचना अंग्रेज सरकार को पूर्व में ही मिल गई और क्रान्ति के कर्णधारों को एक–एक करके कुचल दिया गया था। मंगलपाण्डे जैसे क्रान्ति के अग्रदूत फांसी पर लटका दिये गये थे। वह क्रान्ति सफल नहीं हुई, परन्तु 15 अगस्त 1947 की स्वतंत्रता उसी क्रान्ति का प्रतिफल था। इसी प्रकार 16 अगस्त 2011 से श्री अन्ना हजारे द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु किया गया तेरह दिवसीय सफल अनशन एक क्रान्ति की शुरुआत है।

श्री अन्ना हजारे को पूर्व घोषणानुसार अनशन प्रातः 10 बजे प्रारम्भ करना था, परन्तु उन्हें प्रातः 8 बजे ही उनके एक मित्र के आवास से बन्दी बनाकर देश की प्रसिद्धि प्राप्त तिहाड़ जेल में बन्द कर दिया गया। तिहाड़ जेल में भी उन्हें उन अपराधियों के सामने की कोठरी में बन्द किया गया, जहाँ पहले से ही ए.राजा एवं कलमाड़ी जैसे भ्रष्टाचारी बन्द थे। श्री अन्ना हजारे की गिरफ्तारी की खबर हवा की तरह पूरे देश में फैल गई एवं चारों ओर धरना–प्रदर्शन प्रारम्भ हो गये। इस परिस्थिति को देखकर केन्द्र की संप्रग सरकार दहल गई, जो सरकार अनशन को स्थान नहीं दे रही थी अब उसने अनशन की स्वीकृति के साथ रामलीला मैदान भी दे दिया था।

अनशन का उद्देश्य सरकार अथवा प्रधानमंत्री के विरुद्ध नहीं था, यह विरोध तो देश में फैले भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए था। भ्रष्टाचार से सभी त्रस्त एवं भुक्तभोगी हैं। आज कहीं भी किसी से बिना रिश्वत दिए काम नहीं कराया जा सकता। इसी वेदना से पीड़ित परम सम्माननीय बाबा रामदेव ने 4 जून 2011 को इसी स्थान पर अनशन किया था, जिसे सरकार ने दानवी व्यवहार कर कुचल दिया। उसी विषय को लेकर पूर्व घोषणानुसार श्री अन्ना हजारे ने अपना अनशन किया था।

सरकार जनलोकपाल बनाने को सहमत थी, परन्तु उसमें प्रधानमंत्री को सीमा से बाहर रखने की शर्त लगा रही थी। शायद वर्तमान सरकार सोचती है कि सदैव उनके दल का ही शासन एवं उनका ही प्रधानमंत्री रहेगा। यह कितनी बड़ी भूल है। हां, एक खतरा अवश्य लगता है कि देश में जो भी बड़े–बड़े घोटाले हुए हैं, उन सभी में प्रधानमंत्री जी की कथित सहभागिता सामने आ रही है, इसलिए इस भय से भयभीत होकर प्रधानमंत्री को सीमा से बाहर रखना चाह रही थी। सरकार श्री अन्ना हजारे के आन्दोलन को भी बाबा श्री रामदेव की तरह कुचलने के प्रयास में थी, परन्तु वह इसमें सफल नहीं हो सकी। कोई भी जनआन्दोलन जन्म लेकर मरता नहीं। विलम्ब हो सकता है, परन्तु समाप्त नहीं हो सकता। अंग्रेज सरकार ने 1857 की क्रान्ति को दबा दिया, परन्तु 1947 में भारत को स्वतंत्र करना ही पड़ा।

यद्यपि मुस्लिम समाज के इमाम "भारत माता की जय" के नारे का विरोध कर रहे हैं, साम्यवादी अपनी खिचड़ी पकाने में लगे हैं, गुजरात की मोदी सरकार के विरोधी पूर्णतः सक्रिय हैं, तथापि अन्ना हजारे अपने दृढ़ निश्चय पर अडिग रहे और अन्ततः सरकार को उनकी मांगें मानना ही पड़ीं।

हमारा संकल्प गोवंश की जान बचाना है। हमारा दृष्टिकोण एवं विश्वास है कि इस सर्वांगीण व्याप्त भ्रष्टाचार का समापन होता है तो गोवंश की जान भी बच सकती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति का जो मूल आधार था गोवंश, आज उसी गोवंश की गर्दन पर निर्मम कटारी चल रही है। गोवंश के हत्यारे को पुलिस छोड़ देती है अथवा ऐसी धाराओं में अपराध दर्ज करती है, जिनमें वह रिश्वत देकर सरलता से छूट जाता है। सरकार के प्रतिनिधि जानते हुए भी गोमांस को अन्य पशुओं का मांस बताकर विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। इसे देश की आय का बड़ा हिस्सा मानकर अधिक निर्यात का आह्वान कर रहे हैं। अभी गत माह देश के महापौरों के सम्मेलन में भारत सरकार से आग्रह किया गया कि मांस निर्यात को बढ़ावा देने हेतु निर्यातकों को अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराये। शीत भंडार स्थापित कराने हेतु सहायता दे। उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री महोदया ने तो 8 बूचड़खाने खोलने की स्वीकृति देने के साथ ही धन की व्यवस्था भी कर दी है।

आज गधे, घोड़े, सूअर, मुर्गे, मछली तो उपलब्ध नहीं हैं, केवल गोवंश असहाय अवस्था में उपलब्ध है, उसी की बंग्लादेश को तस्करी तथा उसी के मांस का निर्यात हो रहा है। देश का दुर्भाग्य है कि भ्रष्टाचार पराकाष्ठा पर है। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण हो तो आशा की जा सकती है की गोवंश का रक्षण भी हो सकेगा। भगवान श्री अन्ना हजारे एवं हमारी प्रार्थना सुनें।

गोसम्पदा

वर्ष - 12

अंक - 11

सितम्बर - 2011

सम्पादक :
जय प्रकाश भारद्वाज

परामर्शदाता :
श्री एम. आर. विरमानी

प्रकाशक :
निरोती लाल अग्रवाल
संकट मोचन आश्रम सै. 6,
रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110022
मो. : 09468681263

प्रचार-प्रसार प्रमुख :
मा. ठा. जयबहादुर सिंह शेखावत,
जयपुर एवं,

श्री जगदीश जी अग्रवाल 'हरीओम'
अमरावती, मो. 09420721734

श्री खेमचन्द जी
राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं संरक्षक
मो. : 09910265221

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672
दूरभाष : 011- 26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

सहयोग राशि

एक प्रति	:	रुपये	10/-
वार्षिक	:	रुपये	100/-
आजीवन	:	रुपये	1100/-

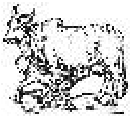

इस अंक में.......

पंचगव्य 2-4

गोरक्षा विभाग की राष्ट्रीय बैठक सम्पन्न 5

गाय हमारे सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग: श्री भागवत 8

गाय और गुरुजी 9

'पंचगव्य' स्वस्थ जीवन के लिए नितांत उपयोगी 10

समाचार श्रंखला 12

राष्ट्र के लिए ''केशरिया क्रांति'' अपरिहार्य 15

तरन तारन में 'गोपाल गऊशाला' का शुभारम्भ 18

केवल सुदृढ़ आर्थिक पक्ष से ही बचेगी गाय 19

The Only Effective Measure to Save Cow 21

गोज्योति ऊर्जा से रोशन होंगे गाँव 24

गोघृत एवं पंचगव्य मिलने का स्थान :

विहिप आश्रम :
संकट मोचन आश्रम, हनुमान मंदिर,
आर.के.पुरम, सेक्टर-6, नई दिल्ली,
फोन : 011-26178992

भाजपा कार्यालय :
अशोक रोड, नई दिल्ली।
दूरभाष 23007500

श्री लवकेश गौड :
के-101, प्राचीन शिव मंदिर,
जी.टी. करनाल रोड,
इन्द्र धर्मकांटा, गुरुद्वारा नानक प्याऊ,
दिल्ली - 110033,
मो. : 9891266534,
9015320057

अन्तिम भाग

पंचगव्य

अष्टम अध्याय

पंचगव्य क्षीर–दधि–घृत–गोमूत्र–गोमयैः।
भिषजां सम्मतं न्यूनमधिभेषजसाधनम्।।

भै.र. 4/37

गोदुग्ध (गाय का दूध), गोदधि (गाय का दही), गोघृत (गाय का घी), गोमूत्र (गाय का मूत्र), गोमय (गाय का गोबर) इन पांचों द्रव्यों को समभाग मिलाने से पंचगव्य बनता है।

निम्नलिखित रोगों में यह उपयोगी हैः–

पंचगव्य सेवन करने से विविध विकारों में लाभ होता है।

1. अपस्मार (Epilepsy/मिर्गी)
2. ज्वर (बुखार)
3. कास (Cough/खांसी)
4. शोथ (Swelling/सूजन)
5. कामला (Jaundice/पीलिया)

पंचगव्य : प्रमुख योग

1. पंचगव्य घृत (स्वल्पम्) (सुश्रुत संहिता)

प्रमुख द्रव्य – प्रति 1 ली.

1. मूर्च्छित गोघृत (गाय का घी)	–	1 ली.
2. गोदुग्ध (गाय का दूध)	–	1 ली.
3. गोदधि (गाय का दहि)	–	1 ली.
4. गोमूत्र (गाय का मूत्र)	–	1 ली.
5. गोमय स्वरस (गाय का गोबर)	–	2 ली.
6. जल	–	4 ली.

निर्माण विधि :

कड़ाही में मंदाग्नि पर घृत को झाग नष्ट होने तक गरम करें। मूर्च्छित घृत में दूध, दहि, गोमूत्र, गोमय स्वरस अंत में पानी मिला दें। मंदाग्नि पर घृत को सिद्ध करें। घृत में उत्पन्न बुलबुले का आकार छोटा होता जाता है।

वर्ति परीक्षा – घी में वर्ति भिगोकर अग्नि पर जलाएं। आवाज न करते हुए वर्ति जलती है तो घी सिद्ध हुआ ऐसा समझना चाहिए। घृत सिद्ध होने पर वस्त्र से छान लें।

निम्नलिखित व्याधियों में यह उपयोगी है :–

1. अपस्मार (Epilepsy)
2. जीर्णज्वर (Chronic fever)
3. राजयक्ष्मा (Tuberculosis)
4. कुष्ठ (Leprosy)
5. त्वचाविकार (Skin diseases)
6. पांडु (Anaemia)
7. त्वचा, अस्थि, मांसगत विकार
8. नस्य के लिये (नाक में 2–2 बूंद डालें)

मात्रा : 5 से 10 एम. एल. अथवा वैद्यकीय सलाहानुसार

अनुपान : दुग्ध, कुनकुना जल।

गोघृत एवं गोदुग्ध से मिलित योग

2. हिंग्वाद्य घृत (गदनिग्रह – भाग 1)

प्रमुख घटक द्रव्य – प्रति 1 ली.

1. हिंगु	–	15 ग्राम
2. बिड नमक	–	15 ग्राम
3. अजवायन	–	15 ग्राम
4. शाहजीरा (स्याहजीरा)	–	15 ग्राम
5. अम्लवेतस (अमलवेत)	–	15 ग्राम
6. कपूरकाचरी	–	15 ग्राम
7. एला (छोटी इलायची)	–	15 ग्राम
8. वचा (वच)	–	15 ग्राम
9. गोदधि	–	1 ली.
10. त्रिकटु (5 ग्राम सोंठ, 5 ग्राम कालीमिर्च, 5 ग्राम पिप्पली)	–	कुल 15 ग्रा.
11. सौवर्चल नमक	–	15 ग्राम
12. दाडिम (अनार दाना)	–	15 ग्राम
13. पुष्करमूल	–	15 ग्राम
14. धान्यक (धनियाँ)	–	15 ग्राम
15. चित्रक	–	15 ग्राम
16. अजमोदा (अजमोद)	–	15 ग्राम
17. तुलसी	–	15 ग्राम
18. यवक्षार	–	15 ग्राम
19. मूर्च्छित गोघृत	–	1. ली.
20. जल	–	4 ली.

निर्माण विधि :

सभी घटकद्रव्य साफ करें। खरल में कूटपीस कर दरदरा बना लें। थोड़ा पानी मिलाकर लड्डू तैयार करें।

एक बर्तन में फेन आने तक घृत गर्म करें। घृत में उपरोक्त घटक द्रव्यों के लड्डू डालें। चट्–चट् आवाज बंद होने तक भून लें। निर्धारित मात्रा में पानी मिलायें। मंदाग्नि पर घृत सिद्ध करने के लिये रखें। घृत सिद्धि के लक्षण देखकर घृत वस्त्र से छान लें। घृत सिद्धि व घृत मूर्च्छना के लक्षण परिशिष्ट में देखें।

निम्नलिखित व्याधियों में यह उपयोगी है:–

1. वातरक्त (Gout)
2. कृमिविकार (Worms)
3. आनाह (Flatulance)
4. संधिवात (Arthritis)
5. शूल (painful conditions)
6. अग्निमांद्य (loss of appetite)

मात्रा : 10–20 ग्राम सुबह–शाम भोजनपूर्व अथवा भोजन के साथ अथवा वैद्यकीय सलाहानुसार।

3. चंदनादि यमक (रस तंत्र सार सिद्ध प्रयोग संग्रह)

प्रमुख घटक द्रव्य – प्रति 2 किलो

1. रक्त चंदन (लाल चंदन)	–	70 ग्राम
2. वट जटांकुर (बड)	–	70 ग्राम
3. दूर्वा (दूब)	–	70 ग्राम
4. मूर्च्छित गोघृत	–	1 ली.
5. यष्टीमधु (मुलेठी)	–	70 ग्राम
6. नीलकमल	–	70 ग्राम
7. गोदुग्ध	–	4 ली.
8. धातकी (धाय)	–	70 ग्राम
9. मूर्च्छित तिल तेल	–	1 ली.

निर्माण विधि :

1. बड़ के जटांकुर तथा दूब साफ कर कूट लें।

2. बाकी सभी घटकद्रव्य कूट पीसकर बारीक करें। इसमें बड के जटांकुर तथा दूब मिलाकर सभी का दरदरा चूर्ण करें। इस चूर्ण में थोड़ा पानी मिलाकर लड्डू तैयार करें।

मंदाग्नि पर मूर्च्छित गोघृत तथा तिल तेल गर्म करें। फेन आना बंद होने पर उपरोक्त लड्डू डालें। इसमें लड्डू डालकर चट्–चट् आवाज बंद होने तक भून लें। भूनते समय अग्नि मंद रखें अन्यथा द्रव्य जलने लगेंगे। आवाज बंद होने पर निर्धारित मात्रा में दूध तथा पानी मिला दें तथा यह मंदाग्नि पर सिद्ध होने के लिये रखें। यमक में उत्पन्न बुलबुलों के आकार कम होते जाते हैं।

यह यमक सिद्ध होने पर वस्त्र से छान लें। तत्पश्चात पैक करें। घृत सिद्धि व घृत मूर्च्छना के लक्षण परिशिष्ट में देखें।

निम्नलिखित रोगों में यह उपयोगी है:–

1. अग्निदग्ध व्रण (Burn wounds)
2. आगंतुज व्रण (Traumatic wounds)
3. वेदना एवं दाहयुक्त व्रण (Wounds with Pain & Burning Sensation)
4. दुष्टव्रण (Infected wounds)
5. पाददारी (Cracked heels)
6. (Sun burn)

प्रयोग : केवल बाह्य प्रयोग के लिए।

टीप : इन द्रव्यों में से जो द्रव्य ताजा/गीला ले रहे हैं, उसे दुगुनी मात्रा में लेना चाहिए।

गोमूत्र एवं गोमय के प्रमुख योग

4. कामधेनु मालिश तेल

प्रमुख घटक द्रव्य – प्रति –4 ली.

1. गोमूत्र	–	2 ली.
2. गोमय (गोबर) स्वरस	–	4 ली.
3. कपूर	–	100 ग्राम
4. अजवायन सत्	–	40 ग्राम
5. तिल तेल	–	4 ली.

निर्माण विधि :

गोमय स्वरस तैयार करना–ताजे 4 किलो गोबर में 4 ली. पानी मिलाकर वस्त्र से छान लें यही गोमय स्वरस है। कपूर तथा अजवायन सत् अलग–अलग पीसकर बॉटल में एकत्रित रखें। तेल स्वरुप में आने तक इस मिश्रण को हिलायें।

कड़ाही में मूर्च्छित तिल तेल गर्म करें। फेन आने दें। इस तेल में गोमय स्वरस, गोमूत्र मिलाकर मध्यम अग्नि पर पाक होने दें। इस मिश्रण को निरंतर हिलाते रहें। गोमय स्वरस, औंटने पर हरे रंग के पत्थर के समान दीखने लगता है। चटचट आवाज आना बंद होने लगे तब तेल सिद्ध हुआ समझकर अग्नि बंद कर दें। इस तेल को छानकर रखें। कुनकुना रहने पर कपूर व अजवायन सत् का तेल इसमें मिला दें। तेल को फिर से छान लें। ठंडा होने पर हवा बंद रखें।

वर्ति परीक्षा 'पंचगव्य घृत निर्माण विधि' में देखें।

निम्नलिखित रोगों में यह उपयोगी है:–

1. वातरोग
2. अभ्यगार्थ (Massage)
3. संधिवात, संधिशूल (जोड़ों में दर्द /Osteoarthritis, Joints Pain)
4. गृध्रसी (Sciatica)

प्रयोग : केवल बाह्य प्रयोग के लिये।

(अभ्यगार्थ, मालिश के लिये कुनकुना कर प्रयोग करें।)

मात्रा : आवश्यकतानुसार अथवा वैद्यकीय सलाहानुसार

5. कामधेनु मरहम

प्रमुख घटक द्रव्य – प्रति 1800 ग्राम

1. गोमूत्र क्षार	–	80 ग्राम
2. गोमय भस्म	–	400 ग्राम
3. शु. गैरिक (गेरु)	–	288 ग्राम
4. तुत्थ (नीलाथोथा)	–	32 ग्राम
5. पेट्रोलियम जेली	–	800 ग्राम

निर्माण विधि : घटक द्रव्य निर्माण

1. गोमय भस्म निर्माण– गोबर के कण्डों को जलाकर गोबर की राख को वस्त्र से छान लें।

2. गेरु–कूटकर छान लें।

3. गोमूत्र क्षार–ताजा गोमूत्र लेकर उसे औटाकर एक चतुर्थांश रखें। इसे ही गोमूत्र क्षार कहते हैं।

4. नीलाथोथा–कड़ाही में बारीक किया हुआ नीलाथोथा सफेद होने तक गर्म करें। फूलने पर बारीक कर लें। पेट्रोलियम जेली में गोमूत्र क्षार मिलाकर अच्छी तरह से एकत्रित करें। गोमय भस्म, गेरु, नीलाथोथा चूर्ण एक साथ मिलाकर खरल में अच्छी तरह से मिला दें। उपरोक्त दोनों मिश्रण एक साथ मिलाने से मरहम तैयार होता है।

निम्नलिखित रोगों में यह उपयोगी है:–

1. त्वचारोग (एक्झिमा)
2. पाददारी (पैरों में दरारें पड़ना)
3. कुनख (नाखून का सड़ना)
4. कण्डु (खुजली)
5. पददाह (पैरों में जलन)

प्रयोग : केवल बाह्य प्रयोग के लिए।

मात्रा : आवश्यकतानुसार अथवा वैद्यकीय सलाहानुसार

गौ- ग्राम रथ यात्रा छत्तीसगढ़ प्रांत में जारी

विश्व हिन्दू परिषद्– गौरक्षा आयाम एवं गौमाता मंदिर ट्रस्ट, मथुरा (उ.प्र.) के तत्वावधान में "गौ ग्राम रथ यात्रा" संपूर्ण छतीसगढ़ प्रांत में गत एक वर्ष से जारी है। गौरक्षा आयाम के प्रांत प्रभारी श्री उमेश पोरवाल एवं संत सुभाष जी महाराज के सामूहिक नेतृत्व में रथ यात्रा का संचालन किया जा रहा है।

श्री पोरवाल जी ने बतलाया कि वर्तमान में गौमाता की पूजा–सम्मान की परंपरा और सुरक्षा की व्यवस्था समाप्त हो गई है। गौहत्याएं दिन– प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। फलस्वरूप गौमाता का अस्तित्व आज संकट में है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में गौमाता की रक्षा के लिए देशवासियों को जागृत करना नितांत आवश्यक है। इसीलिए प्रांत के गाँव–गाँव में रथ यात्रा निकालने के साथ ही सभी ग्रामों में प्रभातफेरियों तथा संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है ताकि सभी ग्रामवासी गौमाता के प्रति जागरूक हो सकें। विश्व हिन्दू परिषद् गोरक्षा आयाम द्वारा राज्य सरकार से मांग की गई है कि–

1. गाय का वैज्ञानिक महत्व शिक्षा में शामिल किया जाये।
2. गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित किया जाये।
3. कत्लखाने बंद किये जायें।
4. कामधेनू आर्थिक स्वावलंबन विश्वविद्यालय की स्थापना की जाये और
5. गोचर भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराया जाये आदि।

बताया गया कि रथ यात्रा– प्रभातफेरियों के दौरान ग्रामीण जनता व्यापक स्तर पर सहयोग कर रही है।

गोरक्षा विभाग की राष्ट्रीय बैठक सम्पन्न

हम गोरक्षा कार्य करते हैं। इसके लिए केरल के अलावा सभी राज्यों में कानून बने हैं। संविधान में भी प्रावधान हैं, परन्तु ये कानून पूर्ण नहीं कहे जा सकते क्योंकि इनके होते हुए गोहत्या धड़ल्ले से हो रही है तथा गोहत्यारे दण्ड से बच जाते हैं। इसलिए हमें विचार करना चाहिए कि संविधान में क्या-क्या संशोधन हों, जिनके होने पर गोमाता बच सके।

विश्व हिन्दू परिषद के गोरक्षा आयाम की अर्द्धवार्षिक अखिल भारतीय बैठक दिनांक 5ए 6ए 7 अगस्त 2011 को जयपुर में सम्पन्न हुई। इसमें 36 प्रान्तों से 153 कार्यकर्ता उपस्थित हुए। बैठक से पूर्व संच की बैठक हुई, जिसमें सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस बैठक को मा.दिनेश चन्द जी ''अन्तर्राष्ट्रीय संगठन महामंत्री, विहिप ने संबोधित किया। उन्होंने गोरक्षा कार्य करने में किन बातों को ध्यान रखा जावे, ऐसे सभी पहलुओं पर मार्गदर्शन दिया। उनका कहना है कि–

1. विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना के 2014 में 50 वर्ष पूर्ण हो रहें हैं। विश्व हिन्दू परिषद् के अन्य सभी आयाम इस स्वर्ण जयन्ती के अवसर तक अधिकतम लक्ष्य निर्धारित कर पूर्ति में लगे हैं। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

2. हम गोरक्षा कार्य करते हैं। इसके लिए केरल के अलावा सभी राज्यों में कानून बने हैं। संविधान में भी प्रावधान हैं, परन्तु ये कानून पूर्ण नहीं कहे जा सकते क्योंकि इनके होते हुए गोहत्या धड़ल्ले से हो रही है तथा गोहत्यारे दण्ड से बच जाते हैं। इसलिए हमें विचार करना चाहिए कि संविधान में क्या–क्या संशोधन हों जिनके होने पर गोमाता बच सके, गोहत्या बन्द हो सके। इसके लिए उच्च एवं उच्चतम् न्यायालयों के वरिष्ठ कानूनविज्ञों का परामर्श लेना चाहिए।

3. मा. दिनेश जी ने प्रारम्भ से अब तक गोहत्याबन्दी के लिए किये गये प्रयासों की एक पुस्तिका तैयार करने का सुझाव दिया।

4. पंचगव्य उत्पादों के प्रारम्भ करने से अब तक की उपलब्धियों की जानकारी दी जावे। पंचगव्य उत्पादन की विधि, उत्पाद का उपयोग, इनका कृषि चिकित्सा एवं अन्य विशेष कार्यों में प्रभाव का विचार हो।

5. संगठन– इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए संगठन एवं कार्यकर्ताओं की महती आवश्यकता है। चूँकि गोरक्षा का कार्य जन–जन तक पहुँचाना है, इसलिए इसका

जयपुर (राज.) में आयोजित अखिल भारतीय चिंतन वर्ग व बैठक में विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री डा. प्रवीण भाई तोगड़िया जी को 'श्रीराम दरबार' का चित्र भेंट करते हुए भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन के प्रान्तीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री जयबहादुर सिंह शेखावत जी। साथ में खड़े हुए दिखाई दे रहे हैं जयपुर प्रांत गोरक्षा प्रमुख डा. अशोक यादव, एवं सत्यनारायण जी शर्मा।

संगठन जिला, प्रखण्ड तथा गांव–गांव तक पहुँचना चाहिए।

6.उत्सव– गोरक्षा सम्बन्धी उत्सव जैसे–गोपाष्टमी, शिवरात्रि, गोवत्सद्वादशी, बलराम जयन्ती, मकरसक्रान्ति आदि सम्पन्न करें। इन उत्सवों पर गोमाता की महत्ता की जानकारी सभी लोगों को दें और गौशालाओं के लिए दान एकत्रित करें। गोपालन हेतु प्रेरणा दें। इन अवसरों पर समाज को गौ कानूनों की जानकारी देना एवं गोभक्तों का सम्मान करना, पंचगव्य उत्पादों की प्रदर्शनी लगायें, गोयात्रा निकालें।

7. गोवंश एवं गौशालाओं हेतु भारतीय जीवजन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई, केन्द्र एवं राज्य सरकारों से आर्थिक सहायता देने के प्रावधान हैं। कार्यकर्ताओं को उनकी जानकारी कर आवश्यक कार्यवाही कर उन सहायताओं को प्राप्त करना चाहिए।

8. प्रचार–प्रसार– किसी भी अच्छे कार्य की समाज को जानकारी देने हेतु प्रचार–प्रसार भी करना चाहिए। उसके लिए गोसम्पदा पत्रिका अपना आधार है, उसके अधिकतम सदस्य बनाने की योजना बनावें।

9. आदर्श कार्यों की जानकारी समाज को दें। जैसे–जहाँ किसान अच्छी प्रकार से जैविक खेती कर रहे हैं, जैविक खाद एवं गोमूत्रकीट नियंत्रकों का उपयोग कर रहे हैं, अच्छी फसल ले रहे हैं, अधिक दूध की गाय पाल रहे हैं, अच्छी नस्ल तैयार कर रहे हैं, आदर्श गौशाला चला रहे हैं।

10. नस्ल सुधार– मा. दिनेश जी ने नस्ल सुधार पर विशेष जोर दिया। उन्होंने बताया कि भारत की गाय जो दूसरे देशों में 25.30 लीटर दूध दे रही है, भारत में क्यों नहीं दे सकती। उन्होंने न्यूजीलैण्ड का उदाहरण दिया कि वैज्ञानिकों ने जर्सी गाय के दूध को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताया है, केवल भारत की देशी नस्ल को सर्वोत्तम बताया है। श्री उमेश चन्द्र पोरवाल इसके प्रभारी हैं।

11.गौसंस्कृति– बैठक में यह भी निश्चित किया गया कि गौसंवर्धन हेतु जो भी संस्था, संगठन व्यक्ति काम कर रहे हैं, उन सभी को साथ लेकर कार्य करें, उसके लिए सामूहिक बैठक, सम्मेलन आयोजित करें।

12. गोविज्ञान परीक्षा– यह परीक्षा 2008 से प्रारम्भ की गई, गोविज्ञान परीक्षा की उपलब्धि को सराहा गया। इस परीक्षा के माध्यम से विशेष रूप से बच्चों में अभिरुचि पैदा हुई। बड़ी उम्र के स्त्री–पुरुष भी इस परीक्षा में भाग ले रहे हैं। इस प्रयत्न को बढ़ाना भी

विश्व हिन्दू परिषद-गोरक्षा विभाग की अ.भा. चिंतन वर्ग व बैठक के दौरान मंचासीन हैं विहिप. के अंतर्राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री दिनेशचंद जी एवं विहिप. के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व गोरक्षा विभाग के प्रभारी श्री हुकुमचंद सावला और विहिप. के केन्द्रीय मंत्री व गोरक्षा विभाग के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री खेमचंद जी एवं अन्य पदाधिकारीगण।

उपयोगी है।

13. गोचर भूमि– पुरातन काल से ही गोवंश के लिए गोचर भूमि की व्यवस्था थी। स्वतंत्रता के पश्चात गोचर भूमियों पर समाज के लोगों ने कब्जा कर लिया है। इस सम्बन्ध में उच्चतम न्यायालय ने ऐतिहासिक निर्णय देकर राज्य सरकारों को निर्देश दिया है कि सभी गोचर भूमियों को गोचरण हेतु मुक्त करायें। श्री हरिहर लाल जी पारीक को इस कार्यवाही का दायित्व सौंपा गया।

14. उपलब्धि– अपने प्रयत्नों से अपने कार्य में प्रगति हो रही है तो उसकी जानकारी समाज में दें ताकि अन्य लोग उस ओर अग्रसर हो सकें। उदाहरणार्थ जहां अच्छी जैविक खेती, गोमूत्र कीटनियंत्रक पंचगव्य अपनाये जा रहे हैं, गोमूत्र से विद्युत उत्पादन हो रहा है, बैल चालित ट्रैक्टर का उपयोग हो रहा है आदि की जानकारी दी जावे।

15. उद्‌घोष– समय–समय पर मेले सम्मेलन होते हैं, उनमें अपने कार्य के प्रति जोश–खरोश पैदा करने हेतु नारे लगाये जाते हैं। ये उद्‌घोष कार्य के प्रति प्रेरणा दें, ईर्ष्या पैदा न करें। यथा गोमाता की जय हो, गाय का दूध अमृत है। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख–ईसाई, गोपालन में सबकी भलाई।

16. गोरक्षा– गोतस्करों, गोकसाइयों से गोमाता को बचाया जावे, इसके लिए युवाओं का संगठन, कानूनविज्ञों का सहयोग, वरिष्ठ लोगों का मार्गदर्शन मिलता रहना चाहिए।

17. गौशालायें– गोवंश का मूल स्थान तो किसान का घर है, परन्तु वर्तमान परिस्थिति में गौशालाएं ही संरक्षण का स्थान हैं। गौशालाओं की व्यवस्था–सफाई, गोवंश का वर्गीकरण, धूप–पानी की उपलब्धि, पर्याप्त स्थान, चारे का संग्रह, पंचगव्य का उत्पादन, नस्ल सुधार आदि अच्छी गौशाला की पहचान है।

18. ग्वालों एवं मातृशक्ति की सहभागिता– ग्वालों एवं माताओं में गोवंश के प्रति सद्‌भावना बने तो उनका सहयोग बहुत लाभकारी है। माताएं आत्म स्वावलम्बी समूह बनाकर अधिक काम कर सकती हैं।

19. समन्वय– समन्वय सर्वत्र आवश्यक एवं उपयोगी है। अपने सभी कार्यकर्ताओं का भी आपस में, परिवार में, प्रशासन में समन्वय अपेक्षित है।

20. संगठन– संगठन ही लक्ष्य की पूर्ति करता है, इसलिए संगठन को जिला, प्रखण्ड, खण्ड एवं ग्राम तक ले जाना चाहिए।

21. कार्यकर्ता/अधिकारी– हमारी संस्था में जो कार्य करता है, वह कार्यकर्ता है। जो अधिक करे, वह अधिकारी है। नाममात्र अथवा दर्शनी होना पर्याप्त नहीं।

22. प्रति उत्पन्नमति– कार्यकर्ता एवं अधिकारियों में तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता बने। कृति की तुरन्त प्रतिकृति हो।

23. दृष्टि (VISION)– कार्यकर्ताओं को दूरदृष्टि रखनी चाहिए। तात्कालिक निर्णय ही पूर्णता प्रदान नहीं करते।

24. पूर्णकालिक वानप्रस्थी कार्यकर्ता– कार्यकर्ता अपने इस कठिन परन्तु पवित्र कार्य के लिए अधिक संख्या में पूर्णकालिक, वानप्रस्थी कार्यकर्ता चाहिए। उसके लिए ऊपर बैठे पदाधिकारियों को प्रयत्न करना चाहिए।

25. अन्य– कार्य करते हुए कुछ नकारात्मक लोग मिलते हैं, जो उल्टा बोलते हैं। जैसे–दूध सब एक है। गाय हमारी माता है तो भैंस क्यों नहीं आदि। हमें उनको समझाना होगा। सरकारों द्वारा बच्चों के आहार में अंडा परोसा जा रहा है तथा बड़े–बड़े विज्ञापन दिये जा रहे हैं। समझाना होगा कि जो बच्चा बचपन में ही अंडा खाने का आदी होगा बड़े होने पर उसे गोमांस भी खाने में संकोच नहीं होगा।

समाज को जागृत करना होगा कि सर्वभक्षी शेरों के लिए अभयारण्य बनाये जा रहे हैं जबकि गोवंश की हत्या कर गोमांस निर्यात किया जा रहा है।

इन विषयों पर तथा बाद में विस्तृत रुप से सभी विषयों पर विचार–विमर्श हुआ। जैसे संगठन एवं सभी विषयों पर श्री हुकुमचन्द्र जी सावला, कानूनी विषय पर श्री परमानन्द मित्तल, श्री जसराज श्री श्रीमाल का, नस्ल सुधार पर श्री भंवरलाल जी कोठारी का अर्थव्यवस्था पर श्री राजेन्द्र सिंहल का, तकनीक एवं पंचगव्य उत्पादों पर श्री सुनील मानसिंहका का, व्यवस्था पर श्री हरिहर लाल जी पारीक का, सम्पूर्ण संगठन पर श्री खेमचन्द जी का, गोसम्पदा पत्रिका पर श्री निरोतीलाल जी अग्रवाल का मार्गदर्शन मिला। क्षेत्रशः गोसंस्कृति कार्यक्रम सम्पन्न कराने का निश्चय हुआ। अंतिम दिन समापन समारोह में डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया जी (अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री, विहिप) का प्रेरणादाई मार्गदर्शन मिला। बैठक सोत्साह सम्पन्न हुई। बैठक स्थानीय कार्यकर्ताओं की मदद से एवं ठा. जयबहादुर सिंह जी शेखावत अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश के सौजन्य से सम्पन्न हुई।

प्रस्तुति–निरोतीलाल अग्रवाल

गाय हमारे सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग: श्री भागवत

ब्राजील देश में भारत से ले जाई गई गीर प्रजाति की गाय ने किसानों व देश की आर्थिक प्रगति कर पूरे विश्व के सामने एक अनूठा उदाहरण पेश किया। इससे साबित हो जाता है कि भारत की देशी गाय संसार की सर्वश्रेष्ठ गाय है।

हिसार (हरियाणा)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूज्य सरसंघचालक डा. मोहन राव भागवत ने गांव काबरेल में श्री कृष्णा गौशाला व

गौ अनुसंधान केंद्र का शिलान्यास करने के उपरान्त कहा कि गाय हमारी माता है, उसके प्रति हमारी अपार श्रद्धा है, गाय हमारे सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। 1857 की क्रांति का मूल कारण गाय की चर्बी से बने कारतूस ही थे, जिसकी चिंगारी ने 90 साल बाद विशाल ज्वाला का रूप धारण करते हुए देश को आजाद करवाया। ब्राजील देश में भारत से ले जाई गई गीर प्रजाति की गाय ने किसानों व देश की आर्थिक प्रगति कर पूरे विश्व के सामने एक अनूठा उदाहरण पेश किया। इससे साबित हो जाता है कि भारत की देशी गाय संसार की सर्वश्रेष्ठ गाय है। इसका पालन करके हमारे किसान न केवल समृद्ध बन सकते हैं, बल्कि देश की अर्थ व्यवस्था को भी एक नया आयाम दे सकते हैं। गाय केवल मानव के लिए ही नहीं अपितु सृष्टि के लिए भी उपकारक है।

पू० ज्ञानानंद जी महाराज ने कहा कि गौग्रास की पद्धति आज प्रत्येक गृहस्थ को अपनानी चाहिए। उन्होंने हरियाणा के मेवात क्षेत्र में निरंतर हो रही गौकशी को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए आरोप लगाया कि सरकारें धर्मनिरपेक्षता की आड़ में गौकशी को बंद करवाने में असफल रही हैं। इससे पूर्व मंत्रोच्चारण व शंखनाद के साथ डा. मोहनराव भागवत ने श्रीकृष्ण गौशाला, गौसंवर्धन एवं गौअनुसंधान केंद्र का विधिवत रूप से शिलान्यास किया। उन्होंने भूखंड प्रदाता स्व. चौ. फतेहचंद की धर्मपत्नी श्रीमती हरबंस कौर का श्रीफल व शाल भेंट कर अभिनंदन किया। इस अवसर पर कुंज बिहारी गर्ग व इंद्रसेन राठी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

श्री कृष्ण गौशाला, गौसंवर्धन एवं अनुसंधान केन्द्र के अध्यक्ष मेजर करतार सिंह ने बताया कि स्व. चौधरी फतेहचंद की धर्मपत्नी श्रीमती हरबंस कौर ने आदमपुर तहसील के गांव काबरेल में श्री कृष्ण गोशाला तथा गौसंवर्धन एवं अनुसंधान केन्द्र के लिए 40 एकड़ जमीन केशव माधव धाम ट्रस्ट को दान देकर गौशाला निर्माण की प्रेरणा दी। इस केन्द्र में एक ओर जहां बेसहारा व अपाहिज, लाचार व बीमार गौमाता का उपचार किया जाएगा, वहीं गाय की उत्तम नस्ल को विकसित किया जाएगा। गौशाला में प्रथम चरण में 7 विषयों पर कार्य शुरू किया जाएगा।

प्रस्तुति—विजय शर्मा,
साभार—हिन्दू विश्व

श्री भारतीय गो-कल्याण महामहोत्सव-२०११ २७ अक्टू. से नंदगाँव (सिरोही) में आयोजित होगा

भगवत कृपा से "कामधेनु कल्याण परिवार श्री गोधाम महातीर्थ पथमेडा" को एक दिव्य आयोजन समायोजित करने का सौभाग्य प्रात हो रहा है। 27 अक्टूबर से 10 नवम्बर 2011 तक "श्री भारतीय गो—कल्याण महामहोत्सव—2011" "मनोरमा गोलोक तीर्थ" नंदगांव (केशवा), जिला सिरोही (राज.) में होगा। इसके अन्तर्गत गो—नवरात्र अनुष्ठान, गो—भागवत कथामृत, गोमहिमा संगोष्ठियाँ, संतों के प्रवचन, रात्रिकालीन भजन संध्या" आदि विशाल कार्यक्रम इन दिनों में होंगे। इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत वर्ष से पूज्य संत, महामण्डलेश्वर आचार्य, कथाकार पधारेंगे व हजारों की संख्या में गोभक्त स्थायीरूप से इन दिनों आयोजन परिसर में निवास करेंगे।

साभार – कामधेनु कल्याण

गाय और गुरुजी

'गाय ही हमें एकत्र ला सकती है'

आजादी से पूर्व संपूर्ण देश में गोहत्या रोकने के लिए महात्मा गाँधी जी, लोकमान्य तिलक जी, मदन मोहन मालवीय जी, पुरुषोत्तम दास टंडन जी, गोलवलकर जी (गुरुजी) सहित अनेक महापुरुषों ने काफी प्रयास किये थे। उस समय से लेकर जीवन पर्यन्त श्री गुरुजी गोमाता की रक्षा हेतु प्रयत्नशील रहे।

गुरुजी द्वारा गोवंश रक्षण एवं संवर्धन के संदर्भ में अनेकानेक गणमान्य लोगों के साथ पत्र– व्यवहार किया गया। इसके अलावा अपने प्रवास के दौरान सारे देश में गुरुजी ने इस गंभीर समस्या के समाधान पर अपनी अमृतवाणी से प्रकाश डाला। "गाय और गुरुजी" नामक पुस्तक में उक्त पत्ररूपी एवं अभिव्यक्त किये गये विचारों का ही संकलन है। पत्रिका के पिछले अंकों में उक्त पुस्तक की भूमिका तथा प्रस्तावना का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत अंक से हम गुरुजी के संकलित दिव्य विचारों का उल्लेखन आरंभ कर रहे हैं।

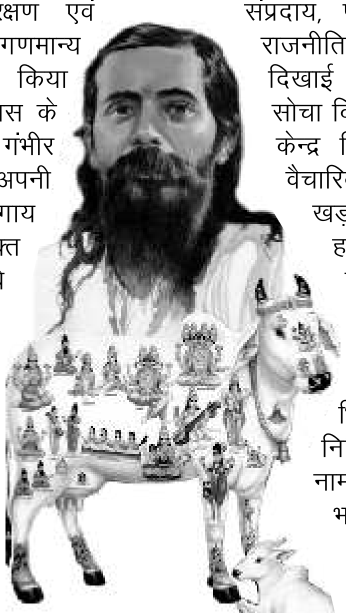

पूर्ण विश्वास है कि समस्त गोभक्त, गोसेवक एवं पाठक बंधु गुरुजी के अलौकिक विचारों से मार्गदर्शन एवं प्रेरणा ग्रहण कर गोवंश की रक्षा–सेवा का संकल्प लेकर अपने–अपने क्षेत्रों में तन–मन–धन से प्रयास करने लगेंगे। गुरुजी का कहना है–

अपने देश में गोवंश संवर्धन का विषय न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि हमारी सांस्कृतिक श्रद्धा तथा एकात्मता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

जिस राष्ट्र का श्रद्धा स्थान नष्ट हो जाता है, उस राष्ट्र के अभ्युदय की कामना करना व्यर्थ सिद्ध होगा।

हम अपने राष्ट्र की उन्नति करना चाहते हैं, किंतु हमें चारों ओर मतभेद, भिन्न– भिन्न संप्रदाय, परस्पर विरोधी एवं दलगत राजनीति और तज्जन्य विघटन ही दिखाई देता है। इस कारण हमने सोचा कि राष्ट्र में एक सर्वमान्य श्रद्धा केन्द्र निर्माण कर सबको एक ही वैचारिक– भावनात्मक आधार पर खड़ा करना आवश्यक है। अब हमें यह सोचना है कि वह सर्वमान्य श्रद्धाकेंद्र कौन–सा है?

अपने राष्ट्र में राजनीतिक या पांथिक भिन्नता भले ही हो, एक बात निर्विवाद सत्य है कि गोवंश का नाम लेते ही श्रद्धा की अतुलनीय भावना जागृत हो जाती है।

इसलिए गाय (गौ) ही हमें एकत्र ला सकती है। हम सब इस दिशा में विचार करें। अपने हृदय में गोमाता के प्रति श्रद्धा भाव बढ़ायें। अपने अंतःकरण तथा राष्ट्र जीवन में पराकोटि की तेजस्विता निर्माण करें।

प्रस्तुति – देवेन्द्र नायक
पूर्णकालिक कार्यकर्ता
गोरक्षा विभाग (विहिप.)

'पंचगव्य' स्वस्थ जीवन के लिए नितांत उपयोगी

–वैद्या सौ. नंदिनी भोजराज, एम.डी. आयुर्वेद

उच्च कोटि के पंचगव्य की उपलब्धि के लिए गाय को अच्छा चारा, कटिया, कड़बा, हरी घास मिलना चाहिए। उसे एक स्थान पर बांधकर नहीं रखना चाहिए। शुद्ध जल, हवा, प्रकाश की व्यवस्था भी जरूरी है। इस तरह से पालन-पोषण की गई गौ से मिला पंचगव्य 'महौषधि' के रूप में कार्य करता है।

गाय से प्राप्त होने वाली पाँच वस्तुओं को 'पंचगव्य' कहा जाता है। ये वस्तुएँ हैं–गाय का दूध, गोदूग्ध से निर्मित दही, दही को मथकर प्राप्त किया मक्खन और उसी मक्खन को तपाकर उससे बना घी या घृत, गोमूत्र और गोबर। इन पाँचों वस्तुओं को पंचगव्य कहा गया है।

दैनंदिन जीवन में हमें यदि इन पाँच वस्तुओं का उपयोग करना है तो उन्हें शुद्ध और परिष्कृत करना आवश्यक है। भारतीय संस्कृति के अनुसार इन पाँचों गव्यों का विभिन्न तरीकों से दैनंदिन जीवन में प्रयोग का विशेष महत्व है। इसके लिए जिस गाय से हम पंचगव्य प्राप्त करते हैं, उस गाय को भारतीय वंश (देशी) का एवं पूर्णतः स्वस्थ होना जरुरी है।

किसी भी प्राणी को स्वस्थ रखना हो तो उसके खान–पान और रहन–सहन की उत्तम व्यवस्था होना जरूरी है। उच्च कोटि के पंचगव्य की उपलब्धि के लिए गाय को अच्छा चारा, कटिया, कड़बा, हरी घास मिलना चाहिए। उसे एक स्थान पर बांधकर नहीं रखना चाहिए। शुद्ध जल, हवा, प्रकाश की व्यवस्था भी जरूरी है। समय–समय पर उदर–कृमि –निर्हरण के लिए आवश्यक उपाय योजना भी आवश्यक है। इस तरह से पालन–पोषण की गई गौ से मिला पंचगव्य 'महौषधि' के रूप में कार्य करता है।

ऐसी उपयोगी औषधि के लिए समूचे विश्व में गाय को ही उपयुक्त माना गया है। हिंदू धर्म के अलावा अन्य धर्मों में भी अन्य प्राणियों के दूध की तुलना में गोदुग्ध को सर्वोत्तम माना गया है।

आयुर्वेद हमारा प्राचीन शास्त्र है। इसमें भी आठ प्राणियों के दूध को मान्यता दी गई है, लेकिन सबसे श्रेष्ठ और सर्वोत्तम गोदुग्ध ही प्रमाणित है।

गोदुग्ध पचने में हलका (शीघ्र पचने योग्य), नेत्रों के लिए हितकर, बुद्धि एवं स्मरण शक्ति वर्धक, स्वाद में मधुर एवं शरीर की सभी धातुओं की पुष्टि करने वाला होता है। यह हृदय की मांस पेशियों को बल देने वाला एवं वीर्य–वर्धक भी प्रमाणित है। गोदुग्ध से बना दही और उसे मथने के बाद निकलने वाला गोतक्र (छाछ) पाचन शक्ति को बल देने वाला होता है। गोतक्र को तो पृथ्वी का 'अमृत' मानते हैं।

इसी गो–दही को मथने से निकलने वाले मक्खन (माखन) का सेवन किया जाय तो निर्बल बालक भी कुछ दिनों में बलवान बन जाता है।

गोमूत्र एवं गोमय के अभ्यंतर प्रयोग (सेवन) से शरीर की पूर्णतः शुद्धि होती है। इसीलिए पंचगव्य को 'पापहर' (रोगहर) भी कहा जाता है (यहां पाप शब्द का अर्थ रोग अभिप्रेत है)।

वर्तमान शास्त्रों के अनुसार भी गोमूत्र की बहुआयामी उपयोगिता मानी गई है। शरीर के वृद्धत्व की ओर बढ़ने की गति को धीमी करने में तथा खुली आँखों से सहज रीति से न दिखाई पड़ने वाले शरीर में व्याप्त हानिकर कृमियों को नष्ट करने (एन्टी आक्साइड, एन्टी फ्यूगल, एन्टी माइक्रोबियल) में गोमूत्र व अर्क की बेजोड़ उपयोगिता वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित हुई है। गोमूत्र व अर्क को इन गुणों के लिए अमेरिका से पेटेन्ट मिल चुके हैं।

अतः गोमाता से प्राप्त होने वाले इन पाँचों गव्यों को हमने यदि अपने दैनिक जीवन में उपयोग किया तो स्वस्थ जीवन पाना दुर्लभ नहीं है।

पहले रोज प्रातः गोदुग्ध का सेवन किया जाता था, पर अब चाय और कॉफी जैसे पेयों ने उसका स्थान ले लिया है। चाय में दूध का प्रमाण बहुत थोड़ा होता है, इसीलिए शरीर में दूध से मिलने वाले पोषक तत्वों की कमी हो गई है। स्मृतिवृद्धि एवं गहरी शांति–पूर्ण निद्रा के लिए दूध उपयोगी होता है। रात्रि को सोने के पूर्व गाय के दूध से बनाया घी मिश्रित दूध पीने से पाचन–शक्ति बढ़ती है। पेट साफ रहता है, बद्धकोष्टता नहीं होती।

सवेरे उठते ही दंत–धावन (दातों की सफाई) हमारा नित्य कर्म होता है। पहले जमाने में दांत साफ करने के लिए गोबर की राख का उपयोग होता था। आज भी गाय के गोबर से बने उपलों का कोयला बनाकर 'दंतमंजन' बनाया जाता है। इस मंजन में मुख–शोधन (मुंह को साफ करना) का गुण तो है ही, साथ में मसूड़ों को मजबूत करने का भी गुण है। इसके अतिरिक्त 'यकृत–परेषण' (हिपेटोप्रोटेक्टिव) का भी गुण विद्यमान है।

आयुर्वेद में तो गोमय (गोबर) को अभ्यंतर (पेट में लेना) तथा बाह्य प्रयोग के लिए विभिन्न रूप से उपयोग में लाया गया हैं। ताजा गोमय, उपलों का चूरा, उपलों की जली राख, गोबर का रस, उपलों के चूर्ण का काढ़ा आदि के अनेक प्रकार के उपयोग बताए गए हैं। त्वचा रोगों पर गोबर–गोमूत्र का विशेष प्रभाव बताया गया है।

कभी–कभी कोई कीड़ा काटता है तो त्वचा पर लाली आ जाती है, वहां थोड़ी सूजन भी होती है तथा कटी जगह पर जलन भी होती है। कटी जगह पर दिन में तीन बार गोमूत्र–अर्क लगाने से तुरंत लाभ मिलता है। गोमूत्र अर्क न मिलने पर गोबर भी लगाया जाय तो सूजन समाप्त हो जाती है, लाली भी कम हो जाती है। इसका कारण यही है कि गोमूत्र एवं गोबर में विषनाशक गुण होते हैं। आयुर्वेद में उपयोग में आने वाली अनेक विष–नाशक औषधियों को बनाने के लिए गोमूत्र का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

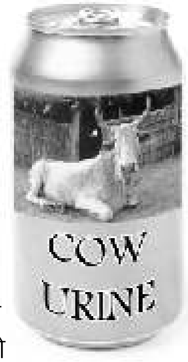

धार्मिक कार्यों में तो यज्ञवेदी पर गोमूत्र और गोबर का उपयोग उनके विशिष्ट गुणों के कारण ही किया जाता है। किसी भी प्रकार का यज्ञ करना हो तो उसके लिए उप्ले, खात वनस्पति की लकड़ियाँ, हवन के लिए गोधृत का उपयोग तो अनिवार्य ही होता है। वर्तमान युग में भी यज्ञस्थान के शुद्धिकरण के लिए गोमूत्र का छिड़काव शुभ माना जाता है। आप कभी गोशाला जाएं तो आप को वहां मच्छर नहीं मिलेंगे। इन्हीं यज्ञसामग्री से वर्तमान की धूप–बत्तियाँ बनती हैं। जिस वातावरण में हम रहते हैं, वहां धूप प्रयोग से वातावरण शुद्ध होता है, मच्छर भी भाग जाते हैं। बनारस हिंदू विश्व विद्यालय ने इसी तथ्य का शोध किया और अब प्रमाणित किया कि गोबर एवं गोघृत से बने धूप का जिन स्थानों में प्रयोग हुआ है वहां का वातावरण शुद्ध हुआ है। 'पंचगव्य' पर आज अनेक प्रकार के शोध कार्य भी जारी हैं।

प्रधान वैद्या–गो–विज्ञान अनुसंधान
केंद्र, देवलापार,नागपुर
भ्रमणध्वनी – 09422808175

समाचार श्रंखला

गाजीपुर बूचड़खाना मात्र तीन दिन ही बंद रखने के आदेश से पार्षद भड़के

नई दिल्ली (मैट्रो)। दिल्ली नगर निगम द्वारा गाजीपुर बूचड़खाने को अब त्योहारों के दिन न बंद करने के आदेश जारी करने से निगम में सत्तारूढ़ भाजपा व विपक्ष कांग्रेस में जबर्दस्त रोष व्याप्त है।

निगम सदन की बैठक में भाजपा पार्षदों ने इस मुद्दे को उठाते हुए विरोध जताया और महापौर द्वारा जारी किए गए इस आदेश को वापस लेने की मांग की। पहले साल में 25 दिन गाजीपुर बुचड़खाने में पशुओं के वध करने का कार्य बंद रखा जाता था, क्योंकि उन दिनों में कोई न कोई त्यौहारों का दिन होता था, लेकिन अब निगम द्वारा बूचड़खाना को साल में मात्र तीन दिन बंद किए जाने के निर्णय का पक्ष व विपक्ष के पार्षदों ने विरोध किया है। कुछ पार्षदों ने आरोप लगाया कि निगम द्वारा यह निर्णय गाजीपुर बूचड़खाना चलाने वाली कंपनी को फायदा पहुंचाने के लिए किया गया है।

निगम आम सभा की बैठक में पार्षद अनेश जैन ने गाजीपुर बूचड़खाने का मुद्दा उठाते हुए कहा कि निगम द्वारा जारी आदेश के तहत 26 फरवरी 2001 को निगम ने गाजीपुर बूचड़खाने को साल में 25 दिन बंद करने का निर्णय लिया था, लेकिन गत 12 अगस्त को एक नया आदेश जारी किया गया है, जिसमें कहा गया है कि महापौर प्रो. रजनी अब्बी ने साल के 25 दिन की छुट्टी को घटाकर अब मात्र 3 दिन कर दिया है। ये तीन छुट्टीयां 26 जनवरी, 15 अगस्त व 2 अक्टूबर गांधी जयंती के दिन होंगीं।

गौरतलब है कि गाजीपुर बूचड़खाने को निगम ने एक निजी कंपनी को लीज पर चलाने के लिए दे रखा है।

साभार– पंजाब केसरी, नई दिल्ली

❖❖❖❖

पशुओं की तस्करी में चार पकड़े गए

अठारह मवेशी सेवा आश्रम को सौंपे

सरही– रोजा। वध के लिए ले जाए जा रहे 18 प्रतिबंधित पशुओं को पुलिस ने मुक्त कराकर चार लोगों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से तीन चाकू और वध करने का सामान भी बरामद हुआ है। दरोगा अजय कुमार सिंह हमराहियों के साथ क्षेत्र भ्रमण पर थे। सूचना पर सरही गांव के समीप पुलिस ने धेराबंदी की और 18 पशुओं सहित चार लोगों को पकड़ लिया जबकि दो भागने में सफल रहे।

पुलिस ने पकड़े गए लोगों के नाम किफायत अली, कय्यूम, युनूस और मुशर्रफ बताए हैं। पुलिस ने बरामद 18 पशुओं को बरतारा सेवा आश्रम के सुपुर्द किया है।

❖❖❖❖

दस पशुओं की मौत-कई मरणासन्न तस्कर भागने में सफल

जलालाबाद (शाहजहांपुर)। कोतवाली पुलिस ने कटरा–फर्रुखाबाद स्टेट हाइवे पर पीछा कर प्रतिबंधित पशुओं से भरा ट्रक पकड़ लिया। इस ट्रक में बुरी तरह ठूंसे गए करीब 60 पशुओं में 10 की मौत हो चुकी थी, जबकि कई मरणासन्न हालत में थे इस दौरान ट्रक पर सवार छह लोग अपने को घिरा देख फायरिंग करते हुए खेतों की ओर भाग गए।

आरोपी हत्थे न चढ़ने की कुछ अलग है कहानी– बता दें कि प्रतिबंधित पशुओं को रामपुर तक पहुंचाने का यही सबसे मुफीद रास्ता है। बड़ी संख्या में यहां से होकर पशुओं की होने वाली तस्करी में कई तरह के शामिल लोग रोजाना ही मोटी रकम पीटते हैं, पीछले दिनों रात पशुओं से भरे 10 टायरा ट्रक के इस रोड़ से होकर गुजरने की पक्की सूचना हिंदू संगठनों से जुड़े कुछ लोगों ने पुलिस को दी। इस पर पुलिस ने रात में ही घेराबंदी कर इस ट्रक को और इस पर सवार ड्राइवर सहित सभी लोगों को दबोच लिया और अज्ञात स्थान पर ट्रक को रखा गया। बताते हैं कि इसके बाद शुरू हुआ लेनदेन का खेल।

❖❖❖❖

अजय शर्मा जिला कोषाध्यक्ष एवं सुनील व जितेन्द्र प्रखण्ड संयोजक बने

शाहजहांपुर। विश्व हिन्दू परिषद–गौवंश सम्वर्धन परिषद की एम लाल पब्लिक स्कूल में हुई बैठक में गौवंश संरक्षण के व्यवहारिक उपाय बताए गए। साथ ही गौमूत्र, गोबर से निर्मित उत्पादों को प्रयोग करने की सलाह दी गई। बैठक में अजय कुमार शर्मा को परिषद का जिला कोषाध्यक्ष सुनील शर्मा को भावलखेड़ा प्रखंड संयोजक, जितेन्द्र सिंह को पुवायां प्रखंड संयोजक मनोनीत किया गया। इस अवसर पर प्रान्तीय गोरक्षा प्रमुख कृष्ण कुमार सक्सैना उपस्थित थे।

❖❖❖❖

चमड़ा उद्योग के लिए भूमि अधिग्रहण को रद्द किया सुप्रीम कोर्ट ने

नई दिल्ली, 23 अगस्त। जमीन अधिग्रहण के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार को फिर करारा झटका दिया है। अदालत ने गाजियाबाद जिले में चमड़ा उद्योग के लिए किसानों की 300 एकड़ जमीन का अधिग्रहण करने संबंधी राज्य सरकार की दो अधिसूचनाओं को मंगलवार को रद्द कर दिया। न्यायमूर्ति जी. एस. सिंघवी और न्यायमूर्ति एच. एल. दत्तू की एक खंडपीठ ने किसानों की याचिकाओं की सुनवाई के बाद यह आदेश दिया।

गौरतलब है कि राज्य सरकार ने 250 एकड़ जमीन के अधिग्रहण की अधिसूचना 2006 में जारी की थी, जबकि 50 एकड़ के अधिग्रहण की 2008 में। किसानों ने चमड़ा उद्योग के लिए अपनी उपजाऊ जमीन लेने का विरोध किया था। पर सरकार ने उनके विरोध की परवाह नहीं की। लिहाजा किसानों ने अदालत का दरवाजा खटखटाया।

साभार – जनसत्ता

❖❖❖❖

गौ-भक्तों पर हमला, आधा दर्जन घायल

अलवर। जिले के अलावड़ा कस्बे में पिछले माह गौकशी को ले जाई जा रही गायों का विरोध करने का मामला भीषण खूनी संघर्ष में बदल गया। अलावड़ा में एक घंटे तक एक समुदाय के लोगों ने गौ भक्तों पर लाठी और पत्थरों से हमला किया किया, जिसमें आधा दर्जन लोग घायल हो गए। इस झगड़े के बाद प्रशासनिक और पुलिस अफसर मौके पर पहुंच गए। इस संघर्ष में एक पक्ष के भवानी कालरा, नरेन्द्र सोनी, रजनी, किशनलाल तथा दूसरे पक्ष के आशुद्दीन घायल हो गए। राजस्थान केसरी' से साभार

❖❖❖❖

गौवंश तस्करों को दो साल की कैद

भीलवाड़ा। जिला एवं सत्र न्यायालय ने गौवंश तस्करी के मामले में सुनाए गये एक फैसले में दो लोगों को दोषी ठहराते हुए उन्हें दो साल की कैद तथा 1600 रूपये के जुर्माने की सजा सुनाई है।

1 अगस्त 2010 को पुलिस ने रामधाम के निकट एक ट्रक से सात बैलों को मुक्त कराया था। इन बैलों को कत्लखाने ले जाया जा रहा था तब पुलिस ने चन्द्रशेखर आजादनगर निवासी मदन पुत्र रागा बंजारा तथा मदन पुत्र मांगू बंजारा को गिरफ्तार किया था।

अखिल भारतीय स्तर पर ११ राज्यों में होगी भारतीय गौविज्ञान परीक्षा

भीलवाड़ा। अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित भारतीय गौविज्ञान परीक्षा इस बार आन्ध्रप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, झारखण्ड, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश सहित 11 राज्यों में सम्पन्न होगी। भारतीय गौविज्ञान परीक्षा समिति के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुरेश कुमार सेन के अनुसार पूरे देश में एक ही दिन दिनांक 30 सितम्बर 2011 को परीक्षा सम्पन्न होगी। अभी तक 11 राज्यों में कार्य प्रारंभ हुआ है और लगभग 20 राज्यो तक यह कार्य पहुंचने की संभावना है। श्री सेन के अनुसार राजस्थान के 24 जिलों में पंजीकरण का कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है।

❖❖❖❖

गोरक्षा कार्यकर्ताओं ने कांवड़ सेवा शिविर लगाया

छपार (मुजफ्फरनगर)। गोरक्षा (विहिप) कार्यकर्ताओं द्वारा पिछले माह छपार–मुजफ्फरनगर मैन रोड़ पर कांवड़ सेवा शिविर लगाया गया। शिविर में निशुल्क जलपान तथा भोजन की व्यवस्था की गई थी। साथ ही निशुल्क चिकित्सा की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई।

मेरठ प्रांत के सह गोरक्षा प्रमुख श्री नीरज भारद्वाज के नेतृत्व में अनेक कार्यकर्ताओं ने प्रतिदिन हजारों शिव भक्तों को जलपान व भोजन कराया और बीमार भक्तों की चिकित्सा कराकर सेवा की। सेवा शिविर में व्यवस्था प्रमुख श्री सोमपाल नायक, सेवा प्रमुख श्री दीपक शर्मा एवं राजेश गर्ग, राजकुमार गोयल, प्रदीप त्यागी सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने भोले भक्तों की निस्वार्थ भाव से सेवा की।

श्री मोदी भाजपा (राज.) गोवंश विकास प्रकोष्ठ के प्रदेश सह-संयोजक बने

जयपुर। ब्यावर (राज.) निवासी श्री मदन मोहन मोदी को भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान गोवंश विकास प्रकोष्ठ की प्रदेश कार्यसमिति में प्रदेश सह–संयोजक पद पर मनोनीत किया गया है।

प्रकोष्ठ के संयोजक श्री हरिहर लाल पारीक द्वारा जारी की गई विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गई। ज्ञातव्य है कि श्री मोदी क्षेत्र में गोसेवा के कार्य में काफी समय से महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

❖❖❖❖

गोरक्षा समिति की बैठक

छपार (राज.)। गोरक्षा समिति की बैठक में गोरक्षा प्रमुख मेरठ नीरज भारद्वाज ने कहा कि सैकड़ों कार्यकर्ताओं को भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद का, सदस्य बनाया गया और 51000 गोरक्षकों की भर्ती की जाएगी।

कस्बे के बाला जी मंदिर में हुई समिति की बैठक में उन्होंने कहा कि भारत में सूर्य उदय होने से पहले लाखों गोवंश की हत्याएं हो रही हैं। बैठक की अध्यक्षता चौधरी कप्तान सिंह व संचालन दीपक शर्मा ने किया। इस अवसर पर सोमपाल नायक, राजेश गोयल, बाबूराम सैनी, राजेश गर्ग विजय आदि मौजूद थे।

❖❖❖❖

करंट से गाय की मौत पर लोगों ने लगाया जाम

बाड़ी (राज.)। बिजली के पोल से चिपकने से गाय की मौत पर मौहल्लेवासियों ने जाम लगाकर विद्युत विभाग के खिलाफ रोष प्रकट किया। कस्बा के गुम्मट अजीजपुरा मौहल्ला में बिजली के पोल में करंट आने से नत्थीलाल जाटव की गाय की मौत हो गई। सूचना देने पर भी विद्युत विभाग का कोई अधिकारी नहीं पहुंचा। लोगों का कहना है कि एक माह में इसी पोल से चिपकने से एक भैंस, एक बकरा, सूअर की मौत हो चुकी है। बिजली के पोल में करंट आता है, इस बात की सूचना पहले भी विभाग के अधिकारियों को दी जा चुकी है। उपखण्डअधिकारी शंकरलाल, डिप्टी एसपी ताराचन्द भदौरिया, कोतवाल दिनेश वशिष्ट ने मौके पर समझाकर लोगों को शान्त किया। पीड़ित की ओर से विद्युत विभाग के अधिकारियों के विरुद्ध लापरवाही का मामला दर्ज कर लिया गया है।

गाय किसान के खूंटे पर सुरक्षित : सावला

मुजफ्फरनगर। गत माह विश्व हिन्दू परिषद गौरक्षा आयाम द्वारा आयोजित एक विशाल प्रान्तीय किसान महासम्मेलन का आयोजन रोहाना कलां स्थित अमृत इण्टर कॉलेज प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रान्त अध्यक्ष सचिन सिंघल ने की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में गौरक्षा प्रभारी मा. हुकुमचन्द सावला रहे व मुख्य अतिथि संयुक्त क्षेत्र गौरक्षा प्रमुख मा. वासुदेव पटेल रहे। विशिष्ट अतिथि बिट्टू शुक्ला रहे।

गौरक्षा आयाम प्रभारी मा. हुकुमचन्द सावला ने कहा कि जिस प्रकार से आज पूरे भारतवर्ष में व मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश में गौ का कटान हो रहा है, यह विचारणीय विषय है। आज प्रत्येक व्यक्ति गौ को बचाने का प्रयास नहीं करता। गाय जब दूध देना बंद कर देती है तो उसे बेच देते है। जिसे कोई भी समाजसेवी संस्था रखना पसंद नहीं करती। ऐसे में गाय की सुरक्षा का स्थान मात्र किसान का खूंटा है। आज यदि प्रत्येक किसान गाय की सुरक्षा का जिम्मा ले तो गाय की रक्षा तो होगी ही साथ ही साथ जैविक खाद उत्पादन में भी सहयोग मिलेगा।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रदीप त्यागी, संजय अग्रवाल राधेश्याम विश्वकर्मा आदि व्यवस्था में रहे।

❖❖❖❖

'गोराम' कथा से गोरक्षा के लिए ग्रामिणों को प्रेरणा मिली

राजसमन्द जिले (राज.) के भावा खेड़ा में स्थित मातृशक्ति गौशाला के संत जगदीश गोपाल महाराज पिछले 6 माह से बांसवाड़ा जिले में उत्तर काशी के स्वामी रामतीर्थ के शिष्य व जालोर जिले के पथमेड़ा में स्थित महंत दत्त शारणानन्द जी महाराज की गौशाला के राष्ट्रीय महामंत्री हैं।

संत गोपाल महाराज गौरक्षा के लिए लोगों को प्रेरित करने हेतु विशेषतौर पर रामकथा करते हैं, जिसको उन्होंने गोराम कथा का नाम दिया है। पिछले 6 माह के दौरान जिले के कई गांवों में उन्होंने कथा आयोजित की है। महाराज ने राज्यभर में 108 गौशालाएं बनाने का संकल्प लिया है। अभी तक 67 गौशालाएं बन चुकी हैं और अन्य का काम चल रहा है।

राष्ट्र के लिए ''केशरिया क्रांति'' अपरिहार्य

– हुकुमचन्द सावला, केन्द्रीय उपाध्यक्ष विहिप, प्रभारी गोरक्षा आयाम

अब हम केसरिया क्रांति का ध्वज (परचम) उठायें और इस पथ पर अग्रसर हों ताकि जिस प्रकाश को आज सारा संसार ढूँढ़ रहा है, उसे हम अपनी मुठ्ठी खोलकर सबको दें। यह निश्चित है कि अगर इस केसरिया संस्कृति की क्रांति में हम पूरी निष्ठा से शामिल हों तो दुनिया के बाकी देशों को हमारा अनुसरण करना होगा और भारतवर्ष फिर एक बार विश्वगुरू बनकर सबको नेतृत्व दे सकेगा।

भारतवर्ष में अर्थव्यवस्था की दृष्टि से अब तक चार प्रकार की क्रांतियाँ हुई – हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, पीली क्रांति और नीली क्रांति। हरित क्रांति का संबंध कृशि में अभूतपूर्व प्रगति से था, जबकि श्वेत क्रांति दूध और दुग्ध उत्पादों की वृद्धि से तथा पीली क्रांति तिलहनों से संबंधित थी और नीली क्रांति मत्स्य पालन से जुड़ी थी ।

इन क्रांतियों ने प्रत्यक्ष रूप से तो भारत की अर्थव्यवस्था को काफी फायदा पहुंचाया है, लेकिन अप्रत्यक्ष तौर पर वास्तव में अभूतपूर्व हानि की है और उसे गर्त में पहुंचाया है। हरित क्रांति से उत्पादन तो बढ़ा, लेकिन रासायनिक खाद, दवाइयां, बीज, डीजल चलित उपकरणों आदि से कृषि की स्वस्थ संरचना छिन्न भिन्न हो गई। ट्रेक्टर आदि ने गोवंश की हानि की, जल्दी काम करने की लालसा ने कृषि का खर्च इतना बढ़ा दिया कि किसान कर्ज में डूबकर आज आत्महत्या करने पर मजबूर हो गया। गोवंश आधारित कृषि में खर्च न्यूनतम आता था और पर्यावरण भी स्वच्छ था, लेकिन हरित क्रांति की चमक दमक में हम सब कुछ गवां बैठे हैं।

बीटी कपास ने तो फसल के कुदरती चक्र और संरचना को ही ध्वस्त कर दिया है। रासायनिक खाद से नाइट्रम ऑक्साइड गैस निकलती है, जो कार्बन डाई ऑक्साइड गैस से 300 गुना ज्यादा हानिकारक होती है । हम कार्बन डाई ऑक्साइड पर तो खूब बोलते हैं, लेकिन इस भयानक गैस पर चुप्पी साधे बैठे हैं। इतना ही नहीं रासायनिक खाद के कारण अब तक 45 प्रतिशत भूमि का क्षरण हो चुका है, जिससे विनाश का आभास पाया जा सकता है। हरित क्रांति की छद्म सफलता से हम स्वयं को धोखा दे रहे हैं। सच्चाई तो यह है कि भारत का कृषि संबंधी सकल घरेलू उत्पाद, जो हरित क्रांति से बढ़ना था, वह उल्टे कम हो गया है। भारत में कृषि का सकल घरेलू उत्पाद या जीडीपी 1950 में 50 प्रतिशत था, लेकिन आज वह 13.2 प्रतिशत ही है। जहाँ तक पंचवर्षीय योजनाओं का सवाल है, उनमें भी बड़ी विडम्बना है, और वह यह है कि हमने प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि के लिए 35 प्रतिशत का प्रावधान किया था, लेकिन दसवीं पंचवर्षीय योजना में यही प्रावधान बढ़ने के बजाय घटकर मात्र 16.5 प्रतिशत रह गया है । आज देश की

60.4 प्रतिशत जनसंख्या विशुद्ध रूप से कृषि पर निर्भर है, लेकिन 46.4 प्रतिशत कर्ज में डूबी है । इतना ही नहीं, वर्ष 1980–83 में कृषि योग्य भूमि 185 मिलियन हेक्टेयर थी, जो वर्ष 2003 में घटकर 183 मिलियन हेक्टेयर ही रह गई है। यानी हमने 2 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि को गवां दिया है, जबकि आबादी और अन्न की मांग निरंतर बढ़ रही है। दूसरी ओर भूमि और मिट्टी की उर्वरता भी कम होती जा रही है । जीवांश पदार्थों का पर्याप्त स्तर बनाये रखा जाए तो आने वाले 50 वर्षों में 45 बिलियन टन कार्बन डाई ऑक्साइड वायुमण्डल से कम की जा सकती है । जैविक कृषि से ही यह संभव है। हालत यह है कि प्रति व्यक्ति कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता भी 0.27 से घटकर 0.18 रह गई है। गोचर भूमि का निरन्तर कम होता जाना जिससे पशु जीवन ही संकट में पड़ गया । ग्राम रोजगार विहीन हो गये, ग्रामों से युवा शक्ति का पलायन बढ़ता जा रहा है । ग्राम संरचना का नष्ट होना प्रारम्भ हो गया है ।

अब बात करें 1965 से प्रारंभ हुई श्वेत क्रांति की, जिसने यूं तो कथित रूप से दूध की नदी बहा दी है, लेकिन सच्चाई का पहलू कुछ और ही है। हमने अपने लालच के कारण देसी गायों को छोड़कर ढेर सारा दूध देने वाली संकरित गायों को बढ़ावा दिया–दूध तो खूब मिला, लेकिन यह दूध आरोग्यकारी होने के बजाय जहरीला हो गया । दूध बढ़ाने वाली दवाइयाँ और हार्मोन के इंजेक्शन का नतीजा यह हुआ कि यही हानिकारक दवाएं दूध के माध्यम से हमारे और हमारे बच्चों के शरीर में पहुँच गई और हार्मोन संबंधी गड़बड़ियाँ सामने आने लगीं। गाय की देसी नस्लें लुप्त होने लगी हैं। देसी गायों की पहले 64 प्रकार की नस्लें होती थीं, लेकिन अब केवल 31 नस्लें ही बची हैं, जो विलुप्त होने की कगार पर हैं। जो देसी नस्लें विलुप्त हो गईं या होने वाली हैं, उनमें हैं–कांकरेज, राठी साहीवाल, थारपारकर, बेचूंर, हरियाणवी, देवनी, रेड सिंधी आदि । 1991 में गोवंश 15 करोड़ 53 लाख था, जो 2003 में बढ़कर केवल 18 करोड 52 लाख हो गया था, यानी जनसंख्या के अनुपात में गोवंश की वृद्धि नहीं के बराबर हुई है । एक तरफ तो दूध की कीमतें और मांग बढ़ने लगी, दूसरी तरफ नकली दूध यानी सिंथेटिक दूध, डिटरजेन्ट मिल्क, केमिकल मिल्क बनने लगा, जिसमें हानिकारक रसायन, यूरिया आदि का प्रयोग होता है। मजे की बात यह है कि जितने दूध की आपूर्ति आज हो रही है, उसका उत्पादन उससे कम है, यानी आपूर्ति को नकली दूध से ही पूरा किया जा रहा है ।

पीली क्रांति यानी तिलहन क्रांति के कारण तिल, मूंगफली, अरंडी, सरसों, अलसी, खोपरा (नारियल), महुआ, तेल खल (पशु खाद्य) आदि का स्थान सोयाबीन पॉम ऑइल ने ले लिया । नीली क्रांति के कारण समुद्र और जलाशयों–नदियों से मछलियाँ कम होने लगीं, जिससे प्रकृति का तंत्र गड़बड़ाने लगा और जल प्रदूशित होने लगा । जब मछलियाँ ही नहीं होंगीं तो पानी को शुद्ध कौन करेगा ?1991 में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता 2209 क्यूबिक मीटर थी जो 2005 में घटकर 1703 क्यूबिक मीटर रह गयी । 2025 में घटकर 1340 क्यूबिक मीटर रह जाएगी । भूमि का जल स्तर निरन्तर गहराता जा रहा है । रासायनिक कृशि में जल अधिक लगता है। कल –कारखानों का जल नदी, जलाशयों को प्रदूशित करता जा रहा है। रासायनिक खाद के प्रयोग से भूमि का नाइट्रोऑक्साइड बढ़ गया है, इसलिए उष्णता बढ़ी, पानी की खपत भी बढ़ी । बोतल का पानी आज की आवश्यकता बन गयी है।

निराशा के घनघोर से घनघोर अंधेरे में भी कोई न कोई आशा की किरण छिपी होती ही है और वह किरण हमें दिखला रही है हमारा राष्ट्रीय ध्वज जो तीन रंग लिए है–हरा, सफेद और केसरिया। दो

रंग उसका लक्ष्य बताते हैं। हरा रंग सबसे नीचे रखा गया है, यह समृद्धि (लक्ष्मी) का प्रतीक है । समृद्धि केवल भौतिक वैभव ही नहीं, बल्कि क्रोध नहीं, मन में नफरत नहीं, किसी के प्रति अशुभ चिंतन भी नहीं। मन की, तन की अमीरी दोनों मिलकर जो भौतिक संपत्ति बनती है, वह साधन संपन्न व नीति संपन्न भी बनाती है। ऐसे वैभव को अपने देश में लाना है, उसके साथ–साथ भाव भी निर्मल बनाना है । पवित्रता और निर्मलता का प्रतीक है सफेद रंग । यह तो लक्ष्य हुआ । उसको पाने के लिए साधन क्या ? इसलिए सबसे ऊपर भारत की भारतीयता का प्रतीक, इतिहास काल से, अनादि काल से वह जो भारत की भलाई के लिए अभी तक प्रयत्न करने वाले महापुरूशों ने जिस रंग से प्रेरणा लेकर जिस रंग की छाया में देश बनाने का प्रयास किया है, ऐसा रंग केसरिया रंग है । इसलिए सबसे ऊपर है। यह त्याग, कर्मशीलता एवं ज्ञान का प्रतीक है । हम सब लोगों को ज्ञान का वरण करते हुए उस ज्ञान के अनुसार जीवन जीने के लिए सब प्रकार के त्याग का वरण करना होगा। यह हमारे राष्ट्र ध्वज का उपदेश है। हरा रंग हरित क्रांति और सफेद रंग श्वेत क्रांति का द्योतक बना, लेकिन इनकी असफलता और इनसे उपजे संकट से छुटकारा दिला सकता है तीसरा रंग–केसरिया रंग। भारतीय संस्कृति का प्रतीक है केसरिया रंग। सूर्य के आगमन और प्रस्थान के समय केसरिया रंग, यज्ञ की पावन ज्वाला का रंग केसरिया, सन्यास का प्रतीक केसरिया, साधुता का द्योतक केसरिया, त्याग का प्रतीक केसरिया, यज्ञ संस्कृति का आधार केसरिया, धर्म युद्धों की पावन ध्वजा केसरिया, श्रद्धा–आस्था का प्रतीक केसरिया, निर्णायक युद्धों में वीरों का बाना केसरिया, आनन्द उत्साह का बसंती रंग केसरिया, केसरिया रंग प्रतीक है प्रकाश का, ज्ञान का, आध्यात्म का। भारतीय संस्कृति और उसमें समाहित रीति–रिवाज और परम्पराएं हमारे ऋषि–मुनियों के हजारों साल के अनुभव से सिंचित हैं।

प्रत्येक परम्परा का अपना सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आधार है। उन्हीं के माध्यम से हमारे मनीशियों ने हमें अप्रत्यक्ष युक्तियों से सही मार्ग दिखाया है। गाय को माँ मानकर उसकी पूजा करना, गोवंश का सम्मान करना, वृक्षों और पशु–पक्षियों का पूजन और संरक्षण, जल, वायु आदि की पूजा–अर्चना ऐसे हजारों उदाहरण दिए जा सकते हैं, जिनसे सिद्ध किया जा सकता है कि आज हम जिस विनाश के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं, अब उससे बचाव की राह खोज रहे हैं, उस विनाश से बचाने का जिम्मा इस केसरिया रंग ने युगों पहले ही ले लिया था। हम समस्या खड़ी करके अब उसका समाधान खोजने में लगे हैं। रोगग्रस्त होकर इलाज ढूंढ़ रहे हैं, पर भारतीय संस्कृति हमें सिखाती है कि इलाज से ज्यादा महत्वपूर्ण है स्वास्थ्य । हम स्वस्थ रहें, प्रकृति स्वस्थ रहे, हवा स्वच्छ और जल शुद्ध रहे, यानी गाय–ग्राम का विकास, गोवंश आधारित कृषि, हर मेढ़ पर पेड़, घर आँगन में वृक्ष, स्वदेशी बीज, खाद, औशधियाँ, हर हाथ को काम, हर खेत को पानी, स्वदेशी स्वाभिमान युक्त जीवन रचना हो। गो आधारित कृशि नीति, अर्थ नीति, गोग्राम आधारित उद्योग नीति, शिक्षा में गोग्राम, जीवन नीति, स्वास्थ्य नीति भी हो। "सर्वे भवन्तु सुखिन : सर्वे सन्तु निरामया" : इसलिए आइए अब हम इस केसरिया क्रांति का ध्वज (परचम) उठायें और इस पथ पर अग्रसर हों ताकि जिस प्रकाश को आज सारा संसार ढूँढ़ रहा है, उसे हम अपनी मुठ्ठी खोलकर सबको दें। यह निश्चित है कि अगर इस केसरिया संस्कृति की क्रांति में हम पूरी निष्ठा से शामिल हों तो दुनिया के बाकी देशों को हमारा अनुसरण करना होगा और भारतवर्ष फिर एक बार विश्वगुरू बनकर सबको नेतृत्व दे सकेगा।

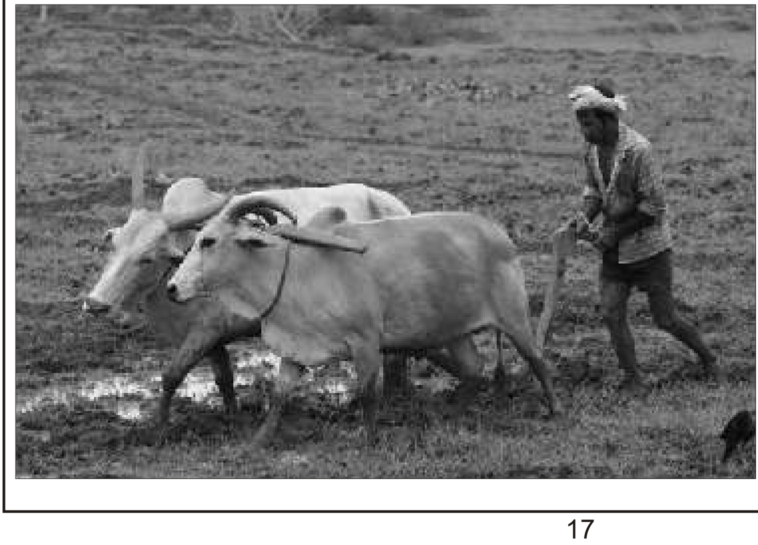

तरन तारन में 'गोपाल गऊशाला' का शुभारम्भ

पिछले माह तरन तारन (पंजाब) में एक नई 'गोपाल गऊशाला' के शुभारम्भ पर नींव में पत्थर रखते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के केंद्रीय मंत्री व गोरक्षा विभाग के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री खेमचंद जी एवं स्वामी कमलपुरी जी। साथ में खड़े दिखाई दे रहे हैं विश्व हिन्दू परिषद् के प्रदेशमंत्री श्री हरेन्द्र अग्रवाल जी सहित अनेक गणमान्य लोग।

गोरक्षा आयाम की प्रान्तीय बैठकें सम्पन्न

कानपुर। गत माह उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के पांच प्रान्तों में गोरक्षा आयाम की प्रान्तीय बैंठकें आयोजित की गईं। सभी बैठकों में प्रान्तीय एवं जिला स्तर तक के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। मेरठ प्रान्त एवं उत्तराखण्ड प्रदेश की बैठकों में विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मंत्री एवं गोरक्षा आयाम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री खेमचन्द जी का प्रेरक मार्गदर्शन सभी कार्यकर्ताओं को मिला। संयुक्त क्षेत्रीय गोरक्षा प्रमुख श्री बासुदेव पटेल सभी बैठकों में उपस्थित रहे।

संगठन को मजबूत करने के लिए प्रान्तीय पदाधिकारियों को अनेक प्रकार के कार्य सौंपे गये। कहा गया है कि सभी पदाधिकारी प्रत्येक जिले का प्रवास कर अक्टूबर माह तक विभागशः बैठकें आयोजित करें। जिला गोरक्षा प्रमुख एवं सह गोरक्षा प्रमुखों की नियुक्तियां की जाएं। गौ (गाय) बचाने के लिए किसानों को गौ उत्पादों विशेषकर गोबर तथा गोमूत्र के आर्थिक लाभ के संबंध में बतलाया जाए। हर जिले में विधि प्रमुख की नियुक्ति की जाए। इसके साथ ही सेवामुक्त व्यक्तियों की बैठकें करना और उनमें से विभाग व जिला के लिए विश्व हिन्दू परिषद के पदाधिकारियों के साथ समन्वय बनाकर नियुक्तियां की जाएं। बैंठकों में विशेष रुप से यह भी कहा गया कि अक्टूबर में नागपुर में होने वाले ''प्रशिक्षण वर्ग'' के लिए प्रत्येक प्रान्त से पांच–पांच कार्यकर्ताओं को भेजा जाए। प्रशिक्षण वर्ग के दौरान सभी कार्यकर्ताओं को पंचगव्य, जैविक खेती, नस्ल सुधार, गौशाला प्रबन्धन एवं गोसंरक्षण व संवर्धन के विषय में प्रशिक्षण दिया जाएगा। तत्पश्चात प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ताओं द्वारा प्रांतों की सभी गौशालाओं सहित अन्य लोगों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके अलावा ''गोहितचिंतक सदस्य'' बनाने, ''केन्द्र अंश'' भेजने एवं ''गोसम्पदा सदस्य'' बनाने के लिए समय बढ़ा दिया गया है।

बैठकों में यह जानकारी भी दी गई कि अगले वर्ष कुंभ के अवसर पर प्रयाग में जिला स्तर तक के गोरक्षा प्रमुखों एवं सह गोरक्षा प्रमुखों का सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। सभी पांचों बैठकें क्रमशः कानपुर, लखनऊ, बरेली, मेरठ एवं ऋषिकेश में संपन्न हुईं।

इसी प्रकार पूर्णिया (झारखण्ड) में भी प्रान्तीय बैठक संपन्न हुई। यहां भी मा. खेम जी का मार्गदर्शन सभी को मिला। बैठक में संयुक्त क्षेत्रीय गोरक्षा प्रमुख श्री त्रिलोकी नाथ बागी एवं प्रान्तीय पदाधिकारी उपस्थित थे।

केवल सुदृढ़ आर्थिक पक्ष से ही बचेगी गाय

– मुलरव राज विरमानी

काश, गायों के प्रति इतनी श्रद्धा रखने वाले भारतवासी यह समक्ष सकते कि थोड़े से उपाय करने से गाय किसान पर बोझ नहीं बल्कि वरदान बन सकती है। ऐसे उपायों में एक विशेष और बड़ा आसान उपाय है गायों के पंचगव्य से बने पदार्थों को व्यापक स्तर पर बनाना, बेचना और उनका श्रद्धा और लगन से प्रयोग करना।

भारतवर्ष में संत और अन्य धार्मिक विषयों के वक्ता आजकल गाय की रक्षा और संवर्धन पर बहुत चर्चा करते हैं। यह बहुत अच्छी बात है क्योंकि गाय भारतीय कृषि का आधार ही नहीं, बल्कि मनुष्य मात्र के जीवन का आधार भी है। यह सर्वविदित सत्य है, जिसने भी गाय की सेवा की उसका जीवन सुखमय, शांतिमय और स्वास्थ्यमय रहा। गाय की सेवा के जितने भी गुण गाये जायें कम हैं। यह दुख की बात है कि गाय के प्रति अगाध श्रद्धा होते हुए भी वह कट रही है। गाय की घटौत्तरी चिंताजनक तो है ही, यह आने वाली बहुत बड़ी मुसीबत का संकेत भी दे रही है।

इस दास ने मलूकपीठाधीश्वर संत श्री राजेन्द्र दास जी महाराज के प्रवचन बहुत सुने और उनके विचार पढ़े भी। वह लगभग अपनी सभी कथाओं में, चाहे किसी भी विषय पर हो, गाय की रक्षा के उपायों के विस्तार से वर्णन करते हैं। भारत में गाय के लगभग सभी श्रद्धालु पथमेड़ा स्थित विशाल गौशाला को जानते ही हैं और विशेषताओं के साथ वहां साठ हजार गायों की समर्पण भाव से सेवा मुख्य है। राजस्थान में जब–जब सूखा पड़ा पथमेड़ा में गायों की संख्या दो लाख से भी अधिक हो गई, क्योंकि दूर–दूर के गाँव वाले अपनी गायों को खिलाने– पिलाने में असमर्थ होने के कारण इस गौशाला में छोड़ देते हैं। इस गौशाला के मुख्य स्वामी दत्तशरणानन्द जी महाराज बड़े धीरज और साहस से गायों की सेवा करते हैं। इस दास को पथमेड़ा गौशाला में एक बार नौ दिन रहने का अवसर मिला। यह बड़े ही भाग्य की बात है कि उसी समय श्री राजेन्द्रदास महाराज जी की भागवत कथा हो रही थी। वातावरण के अनुकूल महाराज जी भागवत पर तो बोले ही, परन्तु अपनी 80 प्रतिशत कथाओं में गाय की रक्षा और संवर्धन के विषयों पर विशेष चर्चा की। कथा के आनन्द में लोग झूमे क्योंकि हर शब्द मूल्यवान था। इन महात्मा जी ने गाय के आर्थिक पक्ष को भली प्रकार लिया। उनकी हर दलील इस बात की पुष्टि करती थी कि गाय की रक्षा तभी सम्भव है जब गाय किसान के परिवार का पालन करे। इस दलील में अगर गहरा गोता लगाएं तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि गाय अपने पालने वालों को बहुत अधिक आर्थिक लाभ पहुँचा सकती है। जब किसी व्यक्ति विशेष को लाभ होता है तो उसका व्यापक असर होना अनिवार्य है। गायों की सेवा के कारण अगर कोई सम्पन्न होता है और उसका व्यापक प्रचार होता है तो देश और लोग उसका अनुकरण करते हैं। यह सिद्ध सत्य है कि गाय अपने पालने वाले परिवार को आर्थिक और शारीरिक लाभ दे सकती है।

गाय माँ है; पर आर्थिक पक्ष जरूरीः

इस दास ने एक वक्ता को गाय के विषय पर यह कहते सुना कि हम आर्थिक पक्ष–वक्ष नहीं जानते, गाय हमारी माता है, हमें इसकी सेवा करनी ही है, बड़ी चिन्ता हुई। उनका यह कहना सत्य तो है, परन्तु वास्तविकता यह भी है कि बहुत सारे गाय पालने वाले किसान इस तथ्य का आदर करते हुए भी मजबूर होकर बूढ़ी, दूध न देने वाली और न ब्याहने वाली गाय को मामूली दामों में बेच देते हैं, यह जानते हुए भी कि खरीदने वाला या तो कसाई है या कसाई का प्रतिनिधि। स्वतंत्रता के पश्चात इन 64 वर्षों में गौमाता कटती–कटती संख्या में लगभग आधी रह गई हैं। बड़े दुख की बात है कि हम अब भी

नहीं चेते और यथार्थ को नकारने में लगे हैं। गाय हमारी अपार श्रद्धा और पूजा की प्रतीक होते हुए भी हमें इसको बचाने के लिए आर्थिक पक्ष को उचित मान्यता देनी ही होगी।

काश, गायों के प्रति इतनी श्रद्धा रखने वाले भारतवासी यह समक्ष सकते कि थोड़े से उपाय करने से गाय किसान पर बोझ नहीं, बल्कि वरदान बन सकती है। ऐसे उपायों में एक विशेष और बड़ा आसान उपाय है गायों के पंचगव्य से बने पदार्थों को व्यापक स्तर पर बनाना, बेचना और उनका श्रद्धा और लगन से प्रयोग करना। यह वस्तुएं अब भी कई बड़ी और छोटी गौशालाओं में बन रही हैं और बेचने की चेश्टा भी की जा रही है। थोड़ा–सा विचारों को विस्तार देने से उनके बनने की गुणवत्ता और व्यापक रूप से बेचने के उपाय अपनाए जा सकते हैं। जब तक इन वस्तुओं की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान नहीं रख जायेगा तब तक उपभोक्ता को विश्वास नहीं होगा कि वह जो ये वस्तुएं खरीद रहा है वे उसको ठीक लाभ देंगीं। इन वस्तुओं को बनाने के लिए आवश्यक है कि श्रद्धालु उद्योगपति आगे आयें और उनका भली प्रकार निर्माण करें। इस संदर्भ में उचित होगा कि गाय का गौमूत्र जैसी वस्तु, जो कई असाध्य रोगों को ठीक करने में समर्थ है, खरीदने वालो को संतोशजनक गुणवत्ता युक्त नहीं मिलती। इस दास ने कई गौशालाओं में देखा कि उनकी गोमूत्र का अर्क बनाने वाली विशाल मशीन प्रयोग में न लाने के कारण जंग पकड़ रही है और गौमूत्र को छान–छान कर बोतलों में भरा जा रहा है। छाना हुआ गौमूत्र ताजी हालत में तो ठीक है, परन्तु गोमूत्र का अर्क तो कई महीनों तक शुद्ध रहता है और अधिक लाभकारी भी। ऐसे ही और वस्तुओं के बनाने के लिए अभी तक बड़े उद्योगपति आगे नहीं आये उन्हें आगे आना चाहिए, जिससे उपभोक्ताओं को इन वस्तुओं की गुणवत्ता पर पूरा विश्वास हो जाये।

गौ उत्पादों की व्यापक बिक्री:

बिक्री की बात करें तो भारत की एक सौ बीस की आबादी में से कम–से–कम अस्सी करोड़ लोग ऐसे होंगे जो पंचगव्य से बनी गुणवत्तायुक्त वस्तुओं को खरीदना चाहेंगे। गाय के सम्मान के कारण इस देश की ऐसी अनेक प्रथाएं हैं जब करोड़ों रुपये का

उद्योगपति अपनी भूमिका निभाएं

गाय के पंचगव्य का सामान खरीदा और वितरण किया जा सकता है। इसमें मुख्य पर्व है दीपावली का त्यौहार जब लोग बड़ी श्रद्धा से अपने निकट सम्बन्धियों को उपहार के रूप में सुन्दर–सुन्दर पैकेटों में वस्तुएँ भेंट करते हैं। कितना अच्छा हो ये सब बस्तुएं पंचगव्य की बनी हों। गाय के पंचगव्य से बनी वस्तुओं की गिनती अपार है, परन्तु आज की युवा पीढ़ी को अत्यन्त लुभाने वाली वे वस्तुएं चाहिए जिससे उनकी त्वचा पर निखार आये और उसका पोषण हो। जैसे– पंचगव्य से बनी कैमिकल–रहित मुखारविन्द की क्रीम, सेव के पश्चात लगाने का लोशन, धूप–बत्ती जिससे साँस की प्रक्रिया को मदद मिले, कैमिकल–रहित मच्छर और मक्खी भगाने की क्वायल, दातों को साफ करने का मंजन, नहाने का साबुन, लाभकारी पेयजल इत्यादि– इत्यादि। अगर देश के उद्योगपति और दूसरे धनी व्यक्ति इन विचारों को अपनाएं तो पंचगव्य के इतने व्यापक प्रयोगों के कारण गौमूत्र दस रुपये लीटर, गोबर पांच रुपये किलो, शुद्ध देशी गाय का दूध जो मानव मात्र को अच्छा स्वास्थ्य देने के साथ–साथ आरोग्य जीवन भी दे सकता है– चालीस रुपये लीटर, ऐसे ही घी 500 रुपये किलो बिक सकता है। इन वस्तुओं से शारीरिक और मानसिक लाभ का भली प्रकार प्रचार और प्रसार करने से लोग दीपावली जैसे शुभ त्यौहार पर मिठाई और ड्राइफ्रूटस के वितरण का बहिष्कार करके केवल गाय के पंचगव्य से बनी अनेक वस्तुओं का वितरण करें– ऐसी विचार धारा बने तो और शुभ अवसरों पर भी गाय के पंचगव्य से बनी वस्तुएं बांटें। इनमें एक और मुख्य अवसर है शादी के न्योतों के कार्ड के साथ जो उपहार में लोग अधिकतर ड्राइफ्रुट्स बांटते हैं, उसके स्थान पर पंचगव्य से बनी वस्तुएं उपहार में दें। ऐसा भी हो सकता है कि अपनी बेटी की ससुराल को उपहार में भी पंचगव्य से बनी वस्तुएं दें।

यह एक ऐसा उपाय है या यूँ कहें कि एक मात्र उपाय है जिससे गाय को सम्मान तो मिलेगा ही साथ ही गाय का आर्थिक पक्ष भी इतना सुदृढ़ हो जायेगा कि किसान अपनी बूढ़ी–सूखी और न हरी होने वाली गाय की भी सेवा कर अपने परिवार का भली– भांति पालन–पोशण कर सकेंगे।

ए–22 गुलमोहर पार्क
नईदिल्ली–49

THE ONLY EFFECTIVE MEASURE TO SAVE COW

Industrialists May Play Their Role

-M. R. Virmani

Cow can make significant contribution to the rural economy if 80 percent of the country's population as also the Indians living abroad may extensively use and propagate the use of panchgavya-made products and exchange properly-packed gifts of these goods. This is the only practical way to save our mother cow.

Safety of cows of Indian breed has all along been a matter of concern. Lovers of cow have run several movements culminating in supreme sacrifices made in 1966 agitation at the Parliament Street in New Delhi when innumerable people particulary several saints were mercilissly gunned down, their bodies, dead or half alive, transported by trucks to an isolated spot on the ridge, doused in kerosene and set on fire. While the population of human beings is increasing, availability of nourishing food is shrinking, This is obviously due to steep fall in cows' population particularly after Independence. During the last few years the government has financed the setting up of several abattoirs all over the country where cows are being slaughtered in great number and meat packed for export. Lovers of cow are helpless spectators.

In the face of this organised butchering, we have to step up our efforts to save the cow whom we

endearingly call our mother. Agitational approach in the past has eluded success. In today's context cow can be saved only if we seriously look to the economic and financeal aspects of rearing it. We must make cows' panchgavya products popular with the masses. Industrialists have to come forward to set up units to manufacture quality products with panchgavya as the basic raw material.

Cow Slaughter Ban Not Working:

Out of the country's population of 121crores persons, atleast 100 clore cow lovers feel strongly in favour of a ban on cow slaughter. Despite the wish of this great majority of our people, Central ban has not been enforced. In fact the ban in force in certain States is not being implemented properly. Let us concede that clamping of a ban alone will not stop killing of cows in a clandestine manner nor have we been able to check smuggling of cows to Bangladesh and other adjoining countries. This is happening because even the farmers, who otherwise worship the cow, are not able to feed old cows and willy nilly sell these at a throwaway price knowing fully well that the cows are ultimately going to slaughter houses.

Manufacture Panchgavya Products:

In view to the above facts, only properly looking after the economic and financial aspects of rearing can save the cow. This can be done conveniently and effectively. Certain enterprising goshalas are already manufacturing a number of items with panchgavya as the basic raw material. Panchgavya consists of desi cows' goumutra, gobar, milk, curd and ghee and all these ingredients are good for health, skin and have other medicinal values. Many of the items can appeal even to the present generation because of their soothing effect of the skin such as chemical-less face cream, after-shave lotion, dhoop-batti which, instead of choking the respiratory system, has a salutary effect, coil to drive away mosquitos and flies, dental cream, bathing soap, health- giving cold drinks and several other products. Success can be achieved only if the industrialists come forward in a big way to set up manufacturing units in areas where there are goshalas to ensure the availability of panchgavya as the raw material. These industrialists can manufacture several other items and also do research to make the best use of panchgavya. The industrial units should pay to these goshalas reasonable price for buying panchgavya so that they become financially strong to rear more cows. As far as marketing of these manufactured items is concerned, these very industrialists and the general public have to cultivate the habit to give as presents the goods manufactured by goshalas

and industrialists and others on occasions such as Deepavali. This can be done on several other occasions also such as packets to go with marriage cards and while visiting friends and relatives. The purpose of popularizing the use of panchgavya-manufactured items is to generate funds to maintain not only cows in the goshalas but also get good returns to farmers through the sale of panchgavya items. These farmers will then never sell even the old cows. In fact old cows will also become a good source of income to the farmers. This is the only way to save the cow and the country.

Panchgavya is Elixir:

Our saints may also, through their discourses, ask their audience to use and exchange gifts manufactured from panchgavya which is elixir for long and healthy life. These saints are already telling their followers through their discourses about the health- giving qualities of cows milk and medicinal value of other products such as goumutra. I had the good fortune to listen to the great Swami Shri Rajendra Dasji Maharaj's Bhagwat katha in Pathmera (Rajasthan) goshala where over 50,000 cows are being looked after with great dedication. The saint talked more about the dire need for looking after the financial aspect of rearing cows so that those who look after these cows may also lead a comfortable and contented life.

Cow can make significant contribution to the rural economy if 80 percent of the country's population as also the Indians living abroad may extensively use and propagate the use of panchgavya-made products and exchange properly-packed gifts of these goods. This is the only practical way to save our mother cow. Mere shouting from roof tops that cow is our mother and we will not tolerate its butchering has not, in any way, resulted in its protection. let us be pragmatic.

A-22, Gulmohar Park,
New Delhi-110049

गोमाता द्वारा हिंसा का सफल प्रतिरोध

सन् 1976 में मैं सनातन–धर्म–विद्यालय, कानपुर में बी०कॉम० प्रथम वर्ष का छात्र था। उस दिन रक्षाबंधन का पर्व था। रक्षाबंधन मनाने के लिये छात्रावास से मैं अपनी बुआजी के यहाँ ग्वालटोली जा रहा था। थाने और ताड़ीखाना के मध्यवाले चौराहे पर सूअर के मांस की एक दूकान है। वहाँ दो वधिकों ने एक सूअर को बाँध रखा था। प्रातः 9 बजे जैसे ही वे वध करने को उद्यत हुए, सूअर भयंकर आर्तनाद करते हुए चीखा। उसी समय कुछ गायें एवं भैंसें उसी मार्ग से चरने हेतु जा रही थीं। उनमें से एक गाय ने उस चीखते हुए सूअर को देखा और उसकी करुण पुकार पर उसने तत्काल उन वधिकों पर तीव्र आक्रमण कर दिया। रोमांचित कर देने वाला दृश्य था वह। कुपित गाय को आक्रामक मुद्रा में एकाएक अपनी ओर आते देखकर दोनों बधिक सूअर के प्राण लेने के बजाय अपने–अपने प्राणों की रक्षार्थ भाग खड़े हुए। क्रोध में भरी हुई गोमाता ने कुछ दूर तक उन वधिकों का पीछा भी किया। इस बीच मौका पाकर उपस्थित दर्शकों में से किसी ने उक्त सूअर को बन्धन मुक्त कर दिया, जिससे वह भी प्राण बचाकर भाग गया।

उस जीव ने अवश्य ही गोमाता को ईश्वर का भेजा हुआ अपना प्राणरक्षक–दूत समझा होगा। गोमाता बधिकों को खदेड़कर उस स्थान पर पुनः वापस आकर खड़ी हो गयीं। ऐसा लगता था, मानो वे अपने इस सत्कृत्य पर सगर्व उन्नत मस्तक किये खड़ी हों। घटना–स्थल पर खड़े लोगों ने गोमाता की बड़ी सराहना की तथा कुछ भावुक लोगों ने जय–जयकार किया। इस घटना का प्रत्यक्षदर्शी मैं स्वयं भावाभिभूत था। मैंने मन–ही–मन सश्रद्धा गोमाता को प्रणाम किया। वस्तुतः गाय की तत्परता और तेजस्विता के कारण ही उस दिन एक निरीह प्राणी की प्राण–रक्षा हो सकी थी। धन्य हैं गोमाता!

–अशोक कुमार गुप्त, साभार–कल्याण

गोज्योति ऊर्जा से रोशन होंगे गाँव

– **पुरुषोत्तम तोष्णीवाल**

देश में सर्वांगीण विकास हेतु ऊर्जा (बिजली) की अहम भूमिका है। देश में जितनी बिजली का उत्पादन होता है उससे आवश्यकता और ज्यादा बढ़ती जाती है। इस आवश्यकता के लिये प्रयास हो रहे हैं, उसमें परमाणु ऊर्जा, कोयला आधारित ऊर्जा, जल से प्राप्त ऊर्जा तथा ईंजन जनरेटर द्वारा प्राप्त ऊर्जा है, परंतु इन उपायों से प्राप्त ऊर्जा उद्योगों के कार्य के लिये ही हो सकेगी।

भारत गांवों का देश कहलाता है तथा ज्यादा आबादी गांवों में बसती है, उसका हर घर और झोपड़ी रोशन हो सके, इसके लिये वैकल्पिक ऊर्जा पर ही ध्यान देना श्रेयस्कर होगा। सरकार इस सम्बन्ध में काफी जागरूक है तथा वैकल्पिक ऊर्जा के रूप में सोलर एनर्जी व बायोगैस ऊर्जा का काफी विकास कर रही है, फिर भी इतने बड़े देश में यह सर्वशुलभ हो इसके लिए इसमें काफी समय तथा पैसा लगेगा।

गौमाता की कृपा से एक ऐसी ऊर्जा का सफल परीक्षण हुआ है, जो बहुत सस्ती होगी, हर जगह उपलब्ध हो सकेगी, जन साधारण उसका फायदा ले सकेंगे, सुगम संचालन होगा, पर्यावरण की स्वच्छ रखेगी, करोड़ों बच्चे जो लालटेन, दीपक, ढिपरी आदि में पढ़ते हैं उनको प्रदूषण रहित बिजली मिलेगी एवं हर झोपड़ी रोशन हो सकेगी। इसकी विशेषताएं नीचे दे रहे हैं।

250 से 500 ग्राम गोमूत्र से यह संचालित होने वाली बैट्री है। इसमें 3 वाट का स्म्क बल्ब लगाया गया है, जो 400 घण्टा जलने के बाद भी निरंतर जल रहा है। इस की बैट्री को चार्ज करने के लिये किसी प्रकार की बिजली के खर्च की आवश्यकता नहीं होती। सिर्फ पुराना गोमूत्र निकाल कर नया डालना होता है और बैट्री स्वतः ही चार्ज हो जाती है। तेजाब से चलने वाली बैट्रियां 5 घण्टे का बैकप लेती हैं, उसके बाद बिजली से चार्ज करना होता है तथा सूर्य के प्रकाश से चार्ज होने वाली प्लेटों को भी 6 घण्टे बाद सूर्य–प्रकाश में चार्ज करना होता है। जबकि गोमूत्र द्वारा संचालित बैट्री में ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता। तेजाब वाली बैट्री में एक साल से सवा साल बाद प्लेटें खराब हो जाने के कारण बदलना पड़ता है तथा नई बैट्री जैसा ही खर्च करना पड़ जाता है, सिर्फ बैट्री के खोखे के दाम कटते हैं। सोलर वाली प्लेटों का भी रख–रखाव काफी महंगा है, पर इस गो–ज्योति में ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता, सिर्फ 250 से 500 ग्राम गोमूत्र को ही बहुत अन्तराल बाद बदलना होता है जो देहातों या कस्बों में आसानी से उपलब्ध हो जाता है। स्म्क का बल्ब लगता है जो जल्दी खराब भी नहीं होता है। बिजली के बल्ब की तरह LED का बल्ब भी बना है। वह छत या दीवार पर टांगा जा सकता है। इसकी रोशनी बहुत ठण्डी तथा आंखों को सुख देने वाली, प्रदूषण मुक्त होती है। इसकी बैट्री में गोमूत्र कभी गर्म नहीं होता। तेजाब की बैट्री में तेजाब गर्म हो जाता है तथा उसी से प्लेटें गलती हैं तथा समय–समय पर उसमें डिस्टिल वाटर डालना पड़ता है। गो–ज्योति में ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता है। सुन्दर कैबिनेट में आराम से सुविधा के अनुसार कहीं भी लाई ले जाई जा सकती हैं आंधी–पानी में भी इसमें कोई नुकसान नहीं होता। सोलर की बैट्री में बरसात के दिनों में तथा सर्दी में चार्ज करने की समस्या रहती है, वह इसमें नहीं रहती। गोमाता की कृपा से अभी तक दूध, दही, घी, खाद, पेस्टीसाइड, औषधियां तथा शुद्ध पर्यावरण प्राप्त हो रहा था, अब बिजली भी प्राप्त हो रही है। गांवों में आधुनिकता के विकास के साथ नये दूर संचार के साधनों की भी भारी खपत हो गई है। जो सेलफोन आज आम आदमी की आवश्यकता हो गई है उसे चार्ज करने के लिये बिजली की आवश्यकता होती है, इस बैट्री से चार्जर लगाकर उसकी पूर्ति हो रही है। शासन यदि गांवों में जिनके पास गोवंश है या उसके रखने का साधन है उनको निःशुल्क या कम कीमत पर यह उपलब्ध करवा दे तो उनके घर में रोशनी आराम से निःशुल्क उपलब्ध हो सकती है।

गौ–माता की आरती

जय जय जय गऊ माता तू है दु:खहारी।
जय जय जय गऊ माता तू है सुखकारी।।

अंग अंग तेरे मैया देव हैं समाये।
जीवन– भर तू हम पै सुधा बरसाये।।

कण–कण है तेरा माता जग का हितकारी।
कैसे हम गाएं माता महिमा तिहारी।।

जय जय जय गऊ माता तू है दु:खहारी।
जय जय जय गऊ माता तू है सुखकारी।।

अमृत है दूध नवनीत गुणकारी है।
औषध है मूत्र, गोबर दू:खहारी है।।

चर्म, श्रृंग, अस्थि, जग बलहारी है।
देव, अधिदेव करें पूजा तिहारी है।।

जय जय जय गऊ माता तू है दु:खहारी।
जय जय जय गऊ माता तू है सुखकारी।।

शुभ कर्म जग में पूर्ण तू कराती है।
बैतरणी माँ तू ही पार कराती है।।

इहलोक परलोक दोनों ही सजाती है।
शीश हम झुकाएं, गाएं स्तुति माँ तिहारी है।।

जय जय जय गऊ माता तू है दु:खहारी।
जय जय जय गऊ माता तू है सुखकारी।।

–'गौ–ग्रंथ' पुस्तक से साभार

Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-S.W.-15/4027/2009-11
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
मुद्रण तिथि : 11 सितम्बर, 2011

गौभक्त श्री नरसिंह जोशी का अवसान

प्रखर हिन्दूवादी नेता, राष्ट्रवादी विचारक, मौलिक चिंतक–लेखक एवं गौभक्त श्री नरसिंह जी जोशी दिनांक 11–08–2011 को रात्रि 10.00 बजे गोलोकवासी हो गये। वे विगत कई वर्षो तक भारतीय गौवंश रक्षण संवर्धन परिषद के केन्द्रीय संगठन मंत्री रहे। वर्तमान में वे वरिष्ठ केन्द्रीय परामर्शदाता थे।

55 वर्षों से निरन्तर विभिन्न दैनिक, पाक्षिक, मासिक पत्र–पत्रिकाओं में (हिन्दी /मराठी) लेखन का कार्य करते रहे। हिन्दू राष्ट्र सेना, हिन्दू महासभा, जनसंघ, विश्व हिन्दू परिषद में अनेक दायित्वों पर काम किया। विशेषकर संगठन कार्य में रूचि थी। आपका राजनीतिक जीवन हिन्दू महासभा से प्रारम्भ हुआ। आप श्रीमंत राजमाता विजयाराजे सिंधिया के अत्यन्त निकट रहे। हिन्दुत्व केन्द्रित विभिन्न विषयों पर देश भर में मराठी एवं हिन्दी व्याख्यान माला में उनके मार्गदर्शन को कभी भुलाया नहीं जा सकता। लगातार घंटों विषय का प्रतिपादन किया। आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं– हिन्दू समष्टिवाद 1956, सावरकर वाटिका के तीन पुष्प अनुवाद 1957, वीर सावरकर लिखित 1857 का भारतीय स्वातंत्र्य समर ग्रन्थ का संक्षिप्त अनुवाद 1957, डॉ. नारायण भास्कर खरे के चरित्र का हिन्दी अनुवाद 1957, संत ज्ञानेश्वर का अवतार कार्य–दैनिक स्वदेश, ग्वालियर में धारावाहिक प्रकाशन, हिन्दू पद पादशाही के निर्माता बाजीराव पेशवा 2007, शिवाजी न होते तो 2008, राजमाता विजयाराजे सिंधिया, समर्थ स्वप्न साकारले (मराठी) में पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

परम गौभक्त श्री जोशी जी लेखनी के धनी थे। वे लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी पत्नी श्रीमती शांति जोशी का देहान्त गत 20 जुलाई को ही हुआ था। तब से वे निरंतर अपनी स्मृति खोते चले जा रहे थे। आपके छः पुत्र हैं। उनके नाम हैं–गोरेश्वर जोशी, मोहन जोशी, अनिल जोशी, विजय जोशी, संजय जोशी और दीपक जोशी। आप संजय जोशी के साथ ही रहते थे।

श्री जोशी के निधन से सम्पूर्ण विश्व हिन्दू परिषद एवं गोरक्षा परिवार को अपूरणीय क्षति हुई है। वे निष्काम कर्म योगी और तपोनिष्ठ राष्ट्रवादी थे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें तथा उनके समस्त शोक संतप्त परिवार को यह स्थायी विछोह एवं असीम वेदना को सहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें।

हमारा गोरक्षा परिवार एवं समस्त विश्व हिन्दू परिषद उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति शोक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

–संपादक

सम्पादक – जयप्रकाश भारद्वाज द्वारा सम्पादित, प्रकाशक व व्यवस्थापक निरोतीलाल अग्रवाल ने साइबर क्रियेशन्स, जे ई-9, खिड़की ऐक्स. मालवीय नगर, नई दिल्ली-17, से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप) संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की।